# मंदाकिनी

## भाग 2

कक्षा 12 के लिए वैकल्पिक हिन्दी
काव्य की पाठ्यपुस्तक

अनिल विद्यालंकार
शशिकुमार शर्मा
रामजन्म शर्मा

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

1990



प्रकाशन सहयोग

व, अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग

म्पादक यू० प्रभाकर राव मुख्य उत्पादन अधिकारी
म्पादक सुरेन्द्रकान्त शर्मा उत्पादन अधिकारी
हायक टी०टी० श्रीनिवासन सहायक उत्पादन अधिकारी

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 110016 द्वारा प्रकाशित तथा शगुन कम्पोजर्स, नं. 4, सफदरजंग एन्कलेव, नई दिल्ली 110029 में राकेश प्रेस, ए-7 फेज़ II, नारायणा इंडस्ट्रियल 0028 में मुद्रित।

# आमुख

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के तत्वावधान में विद्यालय स्तर पर विभिन्न शैक्षिक विषयों के लिए पाठ्यक्रमों, पाठ्यपुस्तकों आदि के निर्माण का कार्य लगभग ढाई दशकों से हो रहा है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति–1986 के लागू होने के साथ ही ऐसी शिक्षण-सामग्री की आवश्यकता का अनुभव किया जाने लगा जो नई शिक्षा-नीति के उद्देश्यों की प्राप्ति में सहायक हो। इस नीति के अनुसार शिक्षा बाल-केन्द्रित होगी और छात्रों के सर्वांगीण विकास पर बल दिया जाएगा। नई शिक्षा-नीति में भारत के राष्ट्रीय जीवन के लिए आवश्यक कुछ महत्त्वपूर्ण मूल्यों को केन्द्रिक शिक्षाक्रम के रूप में स्थान दिया गया है। यह एक दूरगामी शिक्षा नीति है और यदि इसका पालन सही ढंग से किया जाए तो भारत के नव-निर्माण में इससे महत्त्वपूर्ण योगदान मिल सकता है।

नई शिक्षा योजना की महत्त्वपूर्ण विशेषता उसकी बाह्य संरचना का गठन नहीं है, अपितु वह परियोजना एवं दृष्टिकोण है जो शिक्षा का संबंध राष्ट्रीय विकास के साथ जोड़ने पर बल देता है। इस दृष्टि से नवीन पाठ्यपुस्तकों के निर्माण में निम्नलिखित सिद्धांतों का विशेष रूप से समावेश किया गया है :

1. ऐसी पाठ्यसामग्री एवं शैक्षिक क्रियाओं का समावेश जिनसे बालकों में राष्ट्रीय लक्ष्यों–जनतांत्रिकता, धर्मनिरपेक्षता, समाजवाद, सामाजिक न्याय तथा राष्ट्रीय एकता के प्रति चेतना एवं आस्था उत्पन्न हो और उनमें तर्कसंगत वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास हो।

2. पाठ्यचर्या एवं पाठ्यसामग्री भारत की जीवन-परिस्थितियों तथा सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवेश पर आधारित हो

और उनमें वांछित भावी विकास की दिशा भी परिलक्षित हो।

3. पाठ्यपुस्तकें बालकों के भावात्मक एवं बौद्धिक उत्कर्ष, चरित्र-निर्माण तथा स्वस्थ मनोवृत्ति के विकास की दृष्टि से प्रेरणादायी सिद्ध हों, उनके द्वारा छात्रों में स्वयं शिक्षा एवं अधिकाधिक ज्ञानार्जन की उत्कंठा जाग्रत हो और वे निर्धारित पाठ्यविषय तक ही सीमित न रह कर विशद एवं व्यापक अध्ययन के लिए जिज्ञासु तथा तत्पर बने रहें।

4. नई शिक्षा नीति के आधारभूत सिद्धांतों को ध्यान में रखते हुए पाठ्यसामग्री के चयन में केन्द्रिक शिक्षाक्रम से संबंधित विषय सामग्री एवं जीवन-मूल्यों पर विशेष बल हो।

5. सांप्रतिक एवं भावी जगत् को सुखद-सुंदर बनाने वाली जीवन परिस्थितियों की ओर संकेत करने वाले पाठों का समावेश किया गया हो।

उपर्युक्त सिद्धांतों को ध्यान में रखते हुए विविध विषयों के पाठ्यक्रम एवं पाठ्यपुस्तक-निर्माण की योजना तैयार की गई है। इस कार्य को सभी दृष्टियों से परिपूर्ण एवं प्रामाणिक बनाने के लिए राष्ट्रीय स्तर के विषय-विशेषज्ञों, अधिकारी विद्वानों एवं शिक्षकों का सहयोग प्राप्त किया गया है। इस संदर्भ में केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की हिन्दी समिति के अध्यक्ष डॉ. रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव तथा अन्य सदस्यों के सहयोग के लिए मैं विशेष आभारी हूँ।

परिषद् के सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी शिक्षा विभाग के अध्यक्ष डॉ. अनिल विद्यालंकार (अब अवकाश प्राप्त) और रीडर डॉ. शशिकुमार शर्मा (अब अवकाश प्राप्त) ने विभाग में अपने कार्यकाल के दौरान इस पुस्तक के संपादन का कार्य किया। विभाग के डॉ. रामजन्म शर्मा ने इसका अंतिम प्रारूप तैयार किया तथा बड़े परिश्रम से इसका संपादन किया । मैं अपने इन सभी सहयोगियों के प्रति हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ।

जिन कृती लेखकों ने अपनी रचनाएँ इस पुस्तक में सम्मिलित करने

की अनुगति दी है, उनके प्रति हम विशेष रूप से अनुगृहीत हैं।

आशा है, छात्रों की भाषिक तथा साहित्यिक रुचियों के विकास की दृष्टि से यह पुस्तक उपादेय सिद्ध होगी। इनके परिष्कार की दृष्टि से सुविज्ञजनो द्वारा भेजे गए सुझावों और परामर्शों का हम सदा स्वागत करेंगे।

पी.एल.मल्होत्रा

*निदेशक*

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

# आभार

इस पुस्तक के निर्माण में कृपापूर्ण योगदान के लिए राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् निम्नलिखित विद्वानों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करती है–

डॉ. रवीन्द्र नाथ श्रीवास्तव, *अध्यक्ष, हिन्दी समिति, केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड,* सुश्री कमल बासुदेव तथा डॉ. हरिश्चंद्र, *सदस्य, केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड,* श्री निरंजन कुमार सिंह, डॉ. आनंद प्रकाश व्यास, डॉ. कृष्णदत्त पालीवाल, डॉ. मान सिंह वर्मा, डॉ. सुधांशु चुतर्वेदी, डॉ. एन.सुंदरम, डॉ. सुवास कुमार, डॉ. सच्चिदानंद सिंह साथी, डॉ. कमल सत्यार्थी, डॉ. जयपाल सिंह तरंग, श्री भागीरथ भार्गव, डॉ. (श्रीमती) संतोष माटा, श्री कौस्तुभ पंत, डॉ. श्याम बिहारी राय, श्री सुरेन्द्र पाल मित्तल, डॉ. जंग बहादुर पाण्डेय, डॉ. राजेश कुमार, डॉ. सुरेश पंत, डॉ. देवराज शर्मा 'पथिक', डॉ. शंभुनाथ, डॉ. मान्धाता ओझा, डॉ. महेन्द्रनाथ दूबे और श्री. बालकृष्ण सिंहल ।

# विषय-सूची

# गांधी जी का जन्तर

तुम्हें एक जन्तर देता हूं। जब भी तुम्हें सन्देह हो या तुम्हारा अहम् तुम पर हावी होने लगे, तो यह कसौटी आजमाओ :

जो सबसे गरीब और कमजोर आदमी तुमने देखा हो, उसकी शकल याद करो और अपने दिल से पूछो कि जो कदम उठाने का तुम विचार कर रहे हो, वह उस आदमी के लिए कितना उपयोगी होगा। क्या उससे उसे कुछ लाभ पहुंचेगा? क्या उससे वह अपने ही जीवन और भाग्य पर कुछ काबू रख सकेगा? यानि क्या उससे उन करोड़ों लोगों को स्वराज्य मिल सकेगा जिनके पेट भूखे है और आत्मा अतृप्त है?

तब तुम देखोगे कि तुम्हारा सन्देह मिट रहा है और अहम् समाप्त होता जा रहा है।

मो० क० गांधी

# कविता का अध्ययन

## कविता

काव्य की अनेक परिभाषाएँ की गई हैं। कुछ विद्वान भाव और कल्पना के साथ-साथ शब्द और अर्थ के रमणीय सहभाव को काव्य कहते हैं, तो कुछ ने इसे भाव की कलात्मक अभिव्यंजना बताया है तथा किसी ने इसे भाषा के माध्यम से सौंदर्यानुभूति की अभिव्यक्ति कहा है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने कविता की परिभाषा करते हुए कहा है, ''जिस प्रकार आत्मा की मुक्तावस्था ज्ञानदशा कहलाती है उसी प्रकार हृदय की मुक्तावस्था रस दशा कहलाती है। हृदय की इसी मुक्ति की साधना के लिए मनुष्य की वाणी जो शब्द विधान करती आई है उसे कविता कहते हैं।''

इस प्रकार कविता भाषा के माध्यम से भावानुभूति की सौंदर्यमयी अभिव्यक्ति है। कविता में सर्वाधिक बल भाव पर होता है। वस्तुतः कविता भाव का बिंब ग्रहण करती है और ''नाद सौंदर्य'' से कविता की आयु बढ़ती है।

## कविता का अध्ययन

काव्य की रचना और उसके अध्ययन के अनेक प्रयोजन बताए गए हैं। जैसे-यश, अर्थ, व्यवहार-कुशलता, तात्कालिक आनंद, परोक्ष उपदेश, लोकरंजन और लोकमंगल आदि। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने अपने निबंध 'कविता क्या है?' में कविता के उच्च आदर्शों के साथ-साथ उसकी आवश्यकता पर विचार करते हुए लिखा है, ''कविता मनुष्य के हृदय को उन्नत करती है और ऐसे-ऐसे उत्कृष्ट और अलौकिक पदार्थों का परिचय कराती है, जिनके द्वारा यह लोक देवलोक और मनुष्य देवता हो सकता है।'' उन्होंने आगे लिखा है –''मानुषी प्रकृति को जाग्रत रखने के लिए कविता मनुष्यजाति के संग लग गई है । कविता यही

प्रयत्न करती है कि शेष प्रकृति से मनुष्य की दृष्टि फिरने न पाए। जानवरों को इसकी जरूरत नहीं।'' इस प्रकार कविता का लोक-जीवन और मानव-प्रकृति के साथ गहरा सम्बन्ध है।

शुक्ल जी ने काव्य के लोकमंगल पक्ष पर सर्वाधिक बल देते हुए कहा है कि जब तक काव्य मानव-हित और आंतरिक सुधार की प्रेरणा नहीं देगा तब तक वह श्रेष्ठ काव्य नहीं हो सकता। इसी मान्यता के आधार पर उन्होंने रामायण आदि काव्यों को उच्चकोटि का ठहराया और रीतिकालीन कवियों की आलोचना की है।

काव्य लोक के लिए रचा जाता है। अतएव लोकरंजन और लोक मंगल की उपेक्षा श्रेष्ठ काव्य के लिए संभव ही नहीं है। यहाँ रंजन शब्द से अभिप्राय मन-बहलाव नहीं है, अपितु सुख-दुखात्मक भावों की अनुभूति करा कर हृदय को उत्फुल्ल और द्रवीभूत कर उसे मुक्त, विस्तृत, तृप्त और उदात्त करना है। काव्य की सौंदर्यानुभूति से पाठक अथवा श्रोता की वृत्तियाँ उद्बुद्ध और परिष्कृत होकर विकसित होती हैं। इसके अतिरिक्त परिवेश और जीवन–जगत को समझने के लिए कविता एक संवेदनशील जीवन दृष्टि भी देती है।

काव्य के संदर्भ में रस और आस्वाद पर्यायवाची शब्द हैं। इनका तात्पर्य है काव्य द्वारा प्राप्त आनंद। काव्यशास्त्रीय शब्दावली में उस स्थायी भाव को रस कहते हैं, जो विभाव, अनुभाव और संचारी भावों से संयुक्त हो। रस अथवा आस्वाद एक रमणीय भावमूलक स्थिति है। काव्य में वर्णित सुखात्मक और दुखात्मक हर्ष, विस्मय, शोक अथवा क्रोध आदि दोनों स्थितियों में प्राप्त आनंद रस कहलाता है।

प्रायः भाव को ही काव्य के आस्वाद का आधार कहा गया है, किंतु केवल भाव ही नहीं विचार भी काव्यानंद अथवा काव्यास्वाद का कारण हो सकता है। डॉ० नगेन्द्र ने अपने निबंध – 'कविता क्या है?' में कविता के बारे में लिखा है – ''रमणीय भाव, उक्ति-वैचित्र्य और वर्ण-लय संगीत तीनों ही मिलकर कविता का रूप धारण करते हैं।'' अर्थात् कविता इन सबका एक समंजित रूप है।

जब हम कोई कविता पढ़ते हैं और काव्य-सौंदर्य के विश्लेषण का प्रश्न उपस्थित होता है तो हम पाते हैं कि सौंदर्यानुभूति तक जाने के लिए तथा कविता के मर्म का साक्षात्कार करने और उसका आस्वाद लेने

के लिए कविता में प्रयुक्त पदों के विश्लेषण की प्रक्रिया से गुज़रना होता है। विश्लेषण करते हुए जब शब्द के नए-नए अर्थ कौंध-कौंध उठते हैं, तो इस कौतूहल में, इस नव-नूतन की प्रतीति में अलग ही सौंदर्य प्रतिभासित होता है। कविता के संश्लिष्ट अर्थ और उसके सभी संदर्भ विश्लेषण के बिना संभव ही नहीं हैं। अतएव काव्य-सौंदर्य की अनुभूति करने के लिए अथवा उसका आस्वाद पाने के लिए नव-नवीन उपमान, बिंब, प्रतीक, मिथ, अंतर्कथाएँ, अप्रस्तुत प्रयोग, व्यंग्य-वक्रोक्ति, अलंकार आदि उसके समस्त उपादानों का वैचारिक विश्लेषण आवश्यक है।

कविता का आनंद लेने के लिये आवश्यक है कि उसमें सन्निहित कवि की भावानुभूति और वैचारिक पर्तों का साक्षात्कार कर उसे अपनी अनुभूति का अंग बना लिया जाये; उसमें निहित भाव और उसके समग्र संदर्भ को विवेचन- विश्लेषण द्वारा समझते हुए उसके सौंदर्य-मर्म तक पहुँचा जाए। इसके लिए यह भी आवश्यक है कि कविता को एकाधिक बार पढ़ा जाए; साथ ही उसकी अर्थगत व्यंजनाओं को समझना, उसका बिंब ग्रहण करना, बिंब की निर्मिति के लिये मानस में आकृति, रूप, गुण, वर्ण, गंध, स्पर्श, चेतना आदि की वैचारिक अथवा भावात्मक प्रतीति कराना, उसमें निहित प्रतीक, मिथ, व्यंजना, अन्योक्ति, और अलंकार को ठीक-ठीक समझना, उसमें प्रयुक्त कवि की उन समस्त युक्तियों को पहचानना, जिनसे उसने अपनी उक्ति को नवीनता और विचित्रता से मंडित किया है, आवश्यक है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि आस्वाद अथवा रस की स्थिति में लीन होने के लिये जिस सौंदर्यानुभूति की प्रक्रिया से गुजरना आवश्यक है, वह कविता में सन्निहित समस्त भाषिक संरचनाओं, उसमें गुँथे बिंबों, प्रतीकों, मिथों, व्यंग्यों, अन्योक्तियों, अप्रस्तुतों, नवीन भाषिक प्रयोगों तथा अलंकारों के विश्लेषण के बिना संभव नहीं है।

**विभिन्न काल-परिवेश की कविताएँ**

अनुभूति की तीव्रता काव्य की शक्ति और प्रेरणा है, किंतु कवि की इस अनुभूति का स्रोत उसका युग-परिवेश और सामाजिक सांस्कृतिक परिस्थितियाँ होती हैं। उन्हीं के अनुसार सौंदर्यानुभूति के प्रतिमान और माध्यम बदल जाया करते हैं। वीरगाथाओं के कथ्य का आधार युद्ध और

नारी-सौंदर्य रहा है, भक्तिकाल में ज्ञानमार्गी निर्गुण संतों ने सुधारवादी आंदोलनों से प्रेरित होकर सांप्रदायिकता, जातिवाद, पाखंड, अंधविश्वास और धार्मिक बाह्याचारों का विरोध करने के लिये काव्य का सहारा लिया। कबीर, नानक और रैदास आदि ने जो भाव-विह्वल रहस्यात्मक पद रचे, उनमें भी सिद्धों और संतों के दार्शनिक दृष्टिकोण से संबंधित कुछ विशेष उपमानों और प्रतीकों का प्रयोग किया गया है। इन उपमानों और प्रतीकों को समझे बिना संत साहित्य का सौंदर्यबोध कर पाना प्रायः कठिन है। सूफ़ी प्रेमाश्रयी कवियों का सारा काव्य-वैभव प्रेम-तत्व की व्याख्या के निरूपण पर आधारित है।

सगुण भक्त कवियों ने अपने आराध्य के सौंदर्य, शील और शक्ति को आधार बनाकर अपनी अनुभूतियों को कुछ निश्चित उपमानों और प्रतीकों के द्वारा व्यंजित किया। रीतिकालीन कविता के भी अपने सौंदर्यसाँचे हैं, जिनमें उन्होंने अपने युग-परिवेश के अनुसार नारी-सौंदर्य, रूप-वर्णन और विरह-मिलन की व्यंजनाओं में बँधे-बँधाए निश्चित उपमानों का प्रयोग किया, पर उनके चयन और संयोजन में उनकी अपनी कला और कल्पना है।

आधुनिक युग के प्रारंभिक चरण तक हिंदी कवि प्रायः युद्ध, ईश्वर और नारी-सौंदर्य के संकुचित वृत्त में ही सिमटे रहे, किंतु आधुनिक कविता में कथ्य के आयाम और भाषिक संरचना के स्वरूप में भारी अंतर आया। यह अंतर भारतेंदु से आरम्भ होकर आज 'नयी कविता' तक स्पष्ट रूप से देखा-दिखाया जा सकता है। भारतेंदु काल की कविता में राष्ट्रीय भावना में नया उत्साह-आवेग दिखाई दिया। तदंतर छायावादी काल में तो पूरी तरह से बिंब, प्रतीक, लाक्षणिक प्रयोग, अप्रस्तुत विधान तथा मानवीकरण आदि ने सौंदर्याभिव्यक्ति के आधार और माध्यम ही बदल दिए।

छायावाद ने निश्चय ही रीतिकाल और भारतेंदु युग से हटकर कथ्य ही नहीं, भाषा-प्रयोगों की दृष्टि से भी नई जमीन तोड़ी है। कोमल शब्द-चयन, छोटे पद-बंध, संस्कृतनिष्ठ तत्सम पदावली, कोमलकांत कल्पना, यथार्थ जगत से दूर वायवी सौंदर्य के प्रति उत्सुकता और उसमें निमग्नता तथा समस्त सांसारिक कार्यव्यापारों को देखने की एक भावात्मक स्वप्निल दृष्टि, छायावादी काव्यधारा की वे विशेषताएँ हैं, जो

सहज ही उसे पूर्ववर्ती भारतेंदु युगीन अथवा द्विवेदीकालीन काव्य-परंपरा से अलग भूमि पर खड़ा करती हैं।

युग-परिवेश के आग्रह ने विद्रोह किया। प्रत्यक्ष में सौंदर्य और आकर्षण न पाकर उसे परोक्ष और अप्रत्यक्ष में ढूँढ़ना क्या कविता की सार्थकता है? अब काव्य का कथ्य 'चाँदनी', 'संध्या सुंदरी', 'किरण', आँसू', आदि न रहकर 'भैंसागाड़ी', 'नंगे-भूखे बच्चे', 'पत्थर तोड़ती युवती, 'बूढ़ा दीन किसान' और 'उसकी वे आँखें' बन गईं। कथ्य बदल जाने से सौंदर्याभिव्यक्ति में अंतर आना स्वाभाविक था। उपमान, प्रतीक और बिंब बदले तथा व्यंग्य की धार अधिक तेज हुई। आदर्श और स्वप्निलता से उबरकर कवि यथार्थ की कठोर भूमि पर आया और उसी के अनुसार उसके सौंदर्य के उपमान भी बदल गए। इस भाव-धारा की कविता को प्रगतिवादी कविता के नाम से जाना जाता है।

प्रयोगवादी कविता और 'नयी कविता' में छायावादी और प्रगतिवादी युग के कथ्य और अभिव्यक्ति के भाषिक प्रयोगों के बीच आया भारी अंतर स्पष्ट ही दिखाई देता है। संध्या-वर्णन के तीन नमूने देखिए :

संध्या घन माला की सुंदर,
ओढ़े रंग-बिरंगी छींट।
गगन-चुम्बिनी शैल-श्रेणियाँ,
पहने हुए तुषार-किरीट।

- प्रसाद

थी खिली पलाश-प्रभाती-सी
संध्या-सुहासिनी की लाली।
मिल गई प्रभाली थीं दोनों,
आनेवाली, जानेवाली।

- पंत

आकाश का साफा बाँध कर
सूरज की चिलम खींचता
बैठा है पहाड़,
घुटनों पर पड़ी है नदी चादर-सी,
पास ही दहक रही है

पलाश के जंगल की अंगीठी
अंधकार दूर पूर्व में
सिमटा बैठा है भेड़ों के गल्ले-सा

- सर्वेश्वरदयाल सक्सेना

प्रयोगवादी कविता की मुख्य विषयवस्तु आधुनिक मध्यवर्गीय व्यक्ति की मानसिक कुंठाएँ थी। गहरी अंतर्मुखता के कारण यह कविता अपनी संप्रेषणीयता में जटिल और दुरूह बन गई। प्रयोगवाद की ही अगली कड़ी 'नयी कविता' में अपेक्षाकृत अभिव्यक्ति की ईमानदारी पर जोर होने के साथ अनुभूति की प्रामाणिकता का विशेष आग्रह महत्त्वपूर्ण बन गया।

**प्रस्तुत संकलन की कविताएँ**

इस संकलन में बारह कवियों की कविताएँ संकलित की गई हैं, जिनमे प्रेमाश्रयी धारा के प्रतिनिधि कवि जायसी, सगुणभक्ति धारा की रामभक्ति शाखा के प्रतिनिधि कवि तुलसी, रीतिकाल के सेनापति और पद्‌माकर, आधुनिक युग के ब्रजभाषा के सिद्धहस्त कवि रत्नाकर, छायावादी प्रसाद और निराला तथा आधुनिक कविता धारा के सशक्त कवि अज्ञेय, मुक्तिबोध, नागार्जुन, सर्वेश्वर और केदारनाथ सिंह की सुंदर सरस कविताएँ प्रस्तुत की गई हैं।

कविता सौंदर्य की अनुभूति द्वारा भावात्मक विकास करती है तथा मन को अधिक कोमल, उदार और संवेदनशील बनाती है। कुछ कविताएँ मन को तनावमुक्त करती हैं, तो कुछ आंदोलित और क्षुब्ध करके कुछ कर गुजरने के लिये उकसाती हैं, किंतु विद्यार्थियों के संदर्भ में कविता के अध्ययन के कुछ विशिष्ट उद्‌देश्य भी हैं। शुद्ध उच्चारण और अपेक्षित चढ़ाव-उतार के साथ कविता के वाचन की प्रभावपूर्ण क्षमता, कविता में निहित सौंदर्य-तत्त्व का ज्ञान और उसके विवेचन और सराहना की क्षमता का विकास तथा कुछ आगे बढ़कर स्वयं सृजन-क्षमता की योग्यता विकसित करना कविता के अध्ययन-अध्यापन के उद्‌देश्य हैं।

कविता के अध्ययन के लिये सबसे पहले कविता के सस्वर वाचन का अभ्यास करना आवश्यक है। कविता चाहे तुकांत हो या अतुकांत, छंदबद्ध हो या छंदमुक्त, सभी में विद्यमान विशिष्ट लय के साथ उसे पढ़ा जाना चाहिए-एक बार, दो बार और अनेक बार। शुद्ध और स्पष्ट उच्चारण, विषय और भाव के अनुसार स्वर- भंगिमा और वाणी का

उतार-चढ़ाव प्रभावपूर्ण वाचन के लिये आवश्यक है, किंतु जिस ढंग से अवधी में रचित दोहा-चौपाई छंद में 'सीता स्वयंवर' का वाचन अपेक्षित है, वैसा 'सुभग सरासन सायक जोरे' में नहीं। श्रृंगार रस में ओत-प्रोत 'रत्नाकर' की कवित्त छंद में रचित कविता 'उद्धव का मथुरा लौटना' जिस प्रकार की आरोह-अवरोहमयी मधु-सिक्त वाणी की अपेक्षा करती है, वैसी वीर रस में पगी ओजपूर्ण स्वरों में गतिशील 'भीष्म प्रतिज्ञा' नहीं करती। भले ही दोनों रचनाएँ कवित्त छंद में रची गई हैं। कहीं भाषा-भेद होने से तो कहीं छंद-भेद होने से तथा कहीं रसभेद होने से स्वतः ही वाचन-भेद हो जाता है।

**अर्थबोध, अनुभूति की पकड़ और सराहना**

कविता की सौंदर्यानुभूति और उसका आस्वादन बिना अर्थबोध के संभव नहीं है। समुचित अर्थबोध भी तब तक संभव नहीं है जब तक कवि द्वारा प्रयुक्त शब्दों की लाक्षणिकता, व्यंजना, वक्रोक्ति, ध्वनि आदि को ठीक-ठीक न समझ लिया जाए । आवश्यक होते हुए भी केवल कविता के वाच्यार्थ से परिपूर्ण अर्थ सौंदर्य की सिद्धी नहीं हो पाती। अतएव उसके लक्ष्यार्थ और व्यंग्यार्थ को भी जानना आवश्यक हो जाता है। कभी-कभी कुशल कवि अपनी काव्याभिव्यक्ति में शब्दों और वाक्यों के विभिन्न भाषिक प्रयोगों द्वारा, नव-नवीन बिंबों और प्रतीकों द्वारा, मिथ,अन्योक्तियों और अलंकारों द्वारा सौंदर्य की अद्भुत व्यंजना करता है। ऐसी दशा में भाषिक प्रयोगों द्वारा उत्पन्न चमत्कार और सौंदर्य के रहस्य को जाने बिना, बिंबों और प्रतीकों को स्पष्ट किए बिना, पिरोए गए मिथों को पहचाने बिना तथा प्रयुक्त अलंकारों के सौंदर्य को समझे बिना न मूलभाव की पकड़ संभव है और न सहवर्ती भावों और कल्पनाओं की भंगिमाओं को ही समझा जा सकता है। उदाहरण के लिये जब तक ज्ञानमार्गी निर्गुणधारा और सरसभक्ति भावना से ओत-प्रोत सगुणधारा का परिचय न हो, तब तक 'उद्धव का मथुरा लौटना' कविता के सौंदर्य की ठीक-ठीक पकड़ संभव नहीं है। विशेष रूप से ऐसी पंक्तियों की —

> प्रेम रस रुचिर वीराग तूमड़ी में पूरि
> ज्ञान गूदड़ी में अनुराग सौ रतन लै

ठीक इसी प्रकार प्रसाद जी के गीत 'वे कुछ दिन' का सौंदर्य- मर्म

तब तक आत्मसात नहीं किया जा सकता जब तक गीत में सर्वत्र व्याप्त वर्षा के बिंबों की सार्थक व्यंजनाओं को नहीं समझा जाता। प्रसाद, निराला, पंत आदि छायावादी कवियों की कविताओं में मूर्तिमत्ता, बिंब-विधान, प्रतीक-प्रयोग, अप्रस्तुत-विधान, मानवीकरण आदि का इतना भव्य समारोह है कि उसे ठीक-ठीक समझे बिना इन कवियों की कविताओं की सौंदर्यानुभूति नहीं हो सकती।

'नयी कविता' के अध्ययन के साथ यह समस्या और भी जटिल है। जिस प्रकार रीतिकालीन कविताओं के सौंदर्य को तब तक न समझा जा सकता है और न उसकी सराहना ही की जा सकती है, जब तक कि अलंकार-विधान की समझ और नायिका भेद का ज्ञान न हो। उसी प्रकार 'नयी कविता' में प्रयुक्त नए-नए अप्रस्तुतों, प्रतीकों और बिंबों को समझने के साथ-साथ जब तक नए कवि की जीवन दृष्टि और उसके कलाबोध का परिचय नहीं हो पाता, 'नयी कविता' का अर्थबोध नहीं हो पाता। इसके साथ ही भाषिक प्रयोगों को समझे बिना उसकी सौंदर्यमयी पकड़ संभव ही नहीं है। अज्ञेय की कविता 'नदी के द्वीप' के सौंदर्य का तब तक आस्वाद नहीं किया जा सकता जब तक 'नदी के द्वीप' और 'भूखंड' के प्रतीक विद्यार्थियों को स्पष्ट न हों। इसी प्रकार मुक्तिबोध की कविता 'ओ मेरे मन' का सौंदर्यबोध तब तक अधूरा है जब तक 'भूतों की शादी में कनात-से तन गए', 'किसी व्यभिचारी के बन गए बिस्तर', 'दुखों के दागों को तमगों-सा पहना', 'स्वार्थों के टेरियार कुत्तों को पाल लिया' तथा 'तर्कों के हाथ उखाड़ दिए' आदि लाक्षणिक प्रयोगों में निहित तीखे व्यंग्य को ठीक-ठीक नहीं समझा जाता। ठीक इसी तरह सर्वेश्वर और केदारनाथ सिंह की कविताओं का अर्थबोध और सौंदर्य उनकी विशिष्ट जीवन-दृष्टि और कला-बोध को समझे बिना संभव नहीं है।

'मंदाकिनी' में संकलित कविताओं के अध्ययन और आस्वादन में यदि उपर्युक्त विवेचन का सहयोग लिया जाए तो निश्चय ही विद्यार्थियों में नवीन काव्यगत अभिव्यक्ति, सौंदर्य-चेतना, रस-दृष्टि, काव्यगत समझ और उदात्त मानव-मूल्यों का विकास हो सकेगा।

# मंदाकिनी
भाग 2

# मलिक मुहम्मद जायसी

प्रेम की पीर के · महान सूफी कवि मलिक मुहम्मद जायसी (1492-1542, . .र्स (उत्तरप्रदेश) नामक ग्राम में हुआ था। इसी से वे जायसी कहलाए। जायसी उदार सूफी संत होने के साथ संवेदनशील कवि थे। सैयद अशरफ जहाँगीर और मेहदी शेख बुरहान का उल्लेख उन्होंने गुरु के रूप में किया है।

प्रेमाख्यान-परंपरा के कवियों में जायसी सर्वश्रेष्ठ माने जाते हैं। उनकी अमर कृति 'पदमावत' एक आध्यात्मिक प्रेम गाथा है। फारसी की मसनवी शैली में रचित इस काव्य की कथा-वस्तु के लिये जायसी ने प्रेममार्गी सूफी कवियों की भाँति कोरी कल्पना से काम न लेकर राजा रत्नसेन और पदमावती की प्रसिद्ध हिंदू लोककथा को आधार बनाया है।

जायसी उच्चकोटि के कवि थे। उनका वास्तविक महत्त्व प्रेमतत्त्व के व्यापक रूप का सफल चित्रण करने में है,जिसे उन्होंने भारतीय जीवन की पृष्ठभूमि में बड़े मार्मिक ढंग से अंकित किया है। जायसी की भाषा बोलचाल की अवधी है किंतु उनकी काव्य शैली प्रौढ़ और गंभीर है। काव्य रचना के लिये जायसी ने दोहा-चौपाई शैली (कड़वक) को अपनाया। इसी कड़वक शैली का प्रयोग आगे चलकर महाकवि तुलसीदास ने 'रामचरितमानस' में किया है।

जायसी द्वारा रचित बारह ग्रंथ बताए जाते हैं किंतु अभी तक केवल सात ही उपलब्ध हैं– 'पदमावत', 'अखरावट', 'आखिरी कलाम', 'चित्ररेखा', 'कहरनामा', 'मसलानामा' और 'कान्हावत'। 'कान्हावत' में कृष्ण की कथा है। 'अखरावट' में सूफी सिद्धांतों का वर्णन है तो 'आखिरी कलाम' में उस पुनरुत्थान के समय का चित्रण है जो इस्लाम की मान्यताओं के अनुसार सृष्टि के अंत में होने वाला है तथा जिसका

ध्यान रखना आवश्यक है। 'चित्ररेखा' में चंद्रपुर के राजा चंद्रभान की पुत्री चित्ररेखा और कन्नौज के राजा कल्याणसिंह के पुत्रप्रीतम कुँअर की कथा आती है।

'मानसरोदक खंड' पदमावत से लिया गया है। जायसी ने पदमावत में सिंहलद्वीप की राजकुमारी पदमावती तथा चित्तौड़ के राजकुमार रत्नसेन के प्रेम और विवाह का वर्णन किया है। पदमावती अपने रूप और गुणों के लिए प्रसिद्ध थी। एक बार पूर्णिमा के दिन वह अपनी सखियों के साथ स्नान करने के लिये मानसरोवर गई। इस अवतरण में उसी प्रसंग को लिया गया है। कवि ने सखियों से वार्तालाप और क्रीड़ा तथा एक सखी के हार खोने और मिलने का अत्यंत सरस वर्णन किया है। वास्तव में पदमावती के दर्शन और स्पर्श की अभिलाषा से मानसरोवर ने ही वह हार छिपा लिया था। अतः पदमावती के प्रवेश करते ही वह हार तुरंत जल के ऊपर आ गया। इस घटना के पीछे पदमावती में ईश्वरीय ज्योति का अर्थ आभासित है।

## मानसरोदक खंड

एक दिवस पून्यौ तिथि आई। मानसरोदक चली नहाई।।
पदमावति सब सखी बुलाई। जनु फुलवारि सबै चलि आई।।
खेलत मानसरोवर गई। जाइ पालि पर ठाढ़ी भईं।।
देखि सरोवर हँसैं कुलेली। पदमावति सौं कहहिं सहेली।।
ऐ रानी ! मन देखु बिचारी। एहि नैहर रहना दिन चारी।।
जौ लगि अहै पिता कर राजू। खेलि लेहु जो खेलहु आजू।।
पुनि सासुर हम गवनब काली। कित हम, कित यह सरवर पाली।।
कित आवन पुनि अपने हाथा। कित मिलि कै खेलब एक साथा।।
सासु ननद बोलिन्ह जिउ लेहीं। दारुन ससुर न निसरै देहीं।।
पिउ पियार सिर ऊपर, सो पुनि करै दहुँ काह।
दहुँ सुख राखै की दुख, दहुँ कस जनम निबाह।।
सरवर तीर पदमिनी आई। खोंपा छोरि केस मुकलाई।।
ससि-मुख, अंग मलयगिरि बासा। नागिन झाँपि लीन्ह चहुँ पासा।।
ओनई घटा परी जग छाहाँ। ससि के सरन लीन्ह जनु राहाँ।।
छपि गै दिनहिं भानु कै दसा। लेइ निसि नखत चाँद परगसा।।
भूलि चकोर दीठि मुख लावा। मेघ घटा महँ चंद देखावा।।
सरवर रूप विमोहा, हिये हिलोरहि लेइ।
पाँव छुवै पावौं एहि मिस लहरहि देइ।।
लागीं केलि करै मझ नीरा। हंस लजाइ बैठ ओहि तीरा।।
पदमावति कौतुक कहँ राखी। तुम ससि होहु तराइन्ह साखी।।
बाद मेलि कै खेल पसारा। हार देइ जो खेलत हारा।।
सँवरिहि साँवरि, गोरहि गोरी। आपनि आपनि लीन्ह सो जोरी।।
बूझि खेल, खेलहु एक साथा। हार न होई पराए हाथा।।
आजुहि खेल,बहुरि कित होई। खेल गए कित खेलै कोई?

धनि सो खेल खेल सह पेमा। रउताई औ कूसल खेमा ?
  मुहमद बाजी पेम कै, ज्यों भावैं त्यों खेल।
  तिल फूलहि के संग ज्यों, होई फुलायल तेल ।।
सखी एक तेइ खेल न जाना। भै अचेत मनि-हार गँवाना ।।
कँवल डार गहि भै बेकरारा। कासौं पुकारौं आपन हारा ।।
कित खेलै आइउँ एहि साथा। हार गँवाइ चलिउँ लेइ हाथा ।।
घर पैठत पूँछब यह हारू।कौन उतर पाउब पैसारू ।।
नैन सीप आँसू तस भरे। जानौ मोति गिरहिं सब ढरे ।।
सखिन कहा बौरी कोकिला। कौन पानि जेहि पौन न मिला ?
हार गँवाइ सो ऐसे रोवा। हरि हेराइ लेइ जौं खोवा ।।
  लागीं सब मिलि हेरै, बूड़ि बूड़ि एक साथ।
  कोइ उठी मोती लेइ, काहू घोंघा हाथ ।।
कहा मानसर चाह सो पाई। पारस रूप इहाँ लगि आई।।
भा निरमल तिन्ह पाँयन्ह परसे। पावा रूप रूप के दरसे ।।
मलय समीर बास तन आई। भा सीतल, गै तपनि बुझाई ।।
न जनौं कौन पौन लेइ आवा। पुन्य-दसा भै पाप गँवावा ।।
ततखन हार बेगि उतिराना। पावा सखिन्ह चंद बिहँसाना ।।
बिगसे कुमुद देखि ससि रेखा। भै तहँ ओप जहाँ जोइ देखा ।।
पावा रूप रूप जस चहा। ससि-मुख जनु दरपन होइ रहा ।।
  नयन जो देखा कँवल भा, निरमल नीर सरीर।
  हँसत जो देखा हंस भा, दसन जोति नग हीर ।।

## प्रश्न-अभ्यास

1. इस काव्यांश को 'मानसरोदक खंड' क्यों कहा गया ?
2. क्या कह कर सखियों ने पदमावती को खेलने के लिए प्रेरित किया ?
3. पदमावती के रूप-सौंदर्य का वर्णन कीजिए ।
4. पदमावती के सौंदर्य का सरोवर पर क्या प्रभाव पड़ा ?
5. काव्यांश के किस स्थल से लोक-परलोक की ओर संकेत किया गया है ?
6. काव्यांश के आधार पर निम्नलिखित सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर को चिह्नित कीजिए:

    मानसरोवर ने हार इसलिए लौटा दिया क्योंकि :

    (क) उसकी मनोकामना पूर्ण हो गई।

    (ख) उसकी तपन हार से शांत हो गई।

    (ग) हार अमूल्य था।

    (घ) उसके पाप पूर्णतः नष्ट हो गए।
7. काव्य सौंदर्य स्पष्ट कीजिए :

    ओनई घटा परी जग छाहाँ।

    ससि के सरन लीन्ह जन राहाँ ।।
8. अलंकार स्पष्ट कीजिए :

    नैन सीप आँसू तस भरे ।जानौ मोति गिरहिं सब ढरे ।।
9. निम्नलिखित पंक्तियों से किस विशेष अर्थ की व्यंजना हुई है :

    (क) एहि नैहर रहना दिन चारी।

    (ख) दारुन ससुर न निसरै देहीं।
10. 'मानसरोदक खंड' के आधार पर जायसी की भाषा की सामान्य विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

# तुलसीदास

लोकनायक महाकवि तुलसीदास (सन् 1540-1623) का जन्म बाँदा जिले (उत्तरप्रदेश) के राजापुर गाँव में हुआ था। कुछ विद्वान उनका जन्म स्थान सोरों भी मानते हैं।

तुलसी का बचपन घोर कष्ट में बीता। जीवन के प्रारंभिक वर्षों में ही माता-पिता से उनका बिछोह हो गया और वे भिक्षा माँग-माँग कर उदरपूर्ति करते रहे। गुरु नरहरि दास की कृपा से उन्हें राम-भक्ति का मार्ग मिला। रत्नावली से उनका विवाह होना और उसकी बातों से प्रभावित होकर गृह त्याग करना प्रसिद्ध है, किंतु इसके लिये पर्याप्त प्रमाण नहीं हैं। विरक्त होने के बाद वे काशी, चित्रकूट, अयोध्या आदि अनेक तीर्थों में भ्रमण करते रहे। सन् 1574 में अयोध्या में उन्होंने रामचरितमानस की रचना आरंभ की, किंतु उसका कुछ अंश उन्होंने काशी में भी लिखा। बाद में वे काशी में ही रहने लगे थे और यहीं उनका देहावसान भी हुआ।

तुलसीदास लोक-मंगल-साधना के कवि हैं। उनका भावक्षेत्र कबीर, जायसी और सूर की अपेक्षा अधिक व्यापक है। मानव-प्रकृति और जीवन-जगत के संबंध में सूक्ष्म अंतर्दृष्टि और विस्तृत गहन अनुभव के कारण ही वे रामचरित मानस में जीवन के विविध पक्षों का उद्घाटन कर सके। इसमें उनके हृदय की विशालता, भाव-प्रसार की शक्ति और मर्मस्पर्शी स्थलों की पहचान पूरे उत्कर्ष के साथ व्यक्त हुई है।

रामकथा के जिन प्रसंगों का विस्तार मानस में संभव न हो सका, उन्हें तुलसी ने 'कवितावली' और 'गीतावली' में स्थान दिया है। 'विनयपत्रिका' में विनय और आत्मनिवेदन के पद हैं। यों तुलसीदास की लगभग 12 कृतियाँ कही जाती हैं, किंतु उपर्युक्त कृतियाँ ही उनकी ख्याति की विशेष आधार हैं।

तुलसी की रचनाओं में अनेक काव्य शैलियाँ मिलती हैं। रामचरितमानस का मुख्य छंद चौपाई है और बीच-बीच में दोहे, सोरठे, हरिगीतिका तथा अन्य छंद आते हैं। गीतावली, कृष्णगीतावली तथा विनयपत्रिका में गीतबंध परिपाटी की रचनाएँ हैं। कवितावली कवित्त-सवैया छंद में रचित उत्कृष्ट रचना है। दोहावली में स्फुट दोहों का संकलन है। इन विविध काव्य-रूपों में तुलसी ने मुख्य रूप से रामभक्ति-विषयक रचनाएँ प्रस्तुत की हैं। उनकी रचनाओं में प्रबंध और मुक्तक दोनों प्रकार के काव्यों का उत्कृष्ट रूप मिलता है। रामचरितमानस हिंदी का सर्वश्रेष्ठ महाकाव्य है तथा विनय पत्रिका गेय पद शैली में लिखी गई प्रमुख रचना है। ब्रज और अवधी दोनों ही भाषाओं पर तुलसी का असाधारण अधिकार है।

तुलसीदास वस्तुतः ऐसे कवि हैं, जिन पर हिंदी ही नहीं, समस्त भारतीय साहित्य को गर्व है।

सीता स्वयंवर प्रसंग तुलसीकृत रामचरितमानस के बालकांड से लिया गया है। इसमें धनुर्भंग से पूर्व सीता की माँ सुनयना की व्याकुलता के साथ सीता के छोह का मार्मिक चित्रण है। इस प्रसंग में सीता की सहेलियों द्वारा सीता को समझाने तथा धैर्य रखने का वर्णन है। राम द्वारा धनुर्भंग के पश्चात लोगों में हर्ष एवं उल्लास की लहर-सी छा गई है तथा सीता ने राम के गले में जयमाल डाल कर अपनी चिर अभिलाषा की प्राप्ति की है।

तुलसी ने इन स्थलों का इस अवतरण में मार्मिक चित्रण किया है।

''कबहुँक हौं यहि रहनि रहौंगो'' पद तुलसीकृत विनयपत्रिका से लिया गया है। इस पद में तुलसी संत स्वभाव धारण करने और परहित में लगे रहकर अविचल हरि भक्ति प्राप्त करने का संकेत कर रहे हैं।

दूसरे पद में उन्होंने बताया है कि अवसर बीत जाने पर पछताने के सिवाय कुछ भी शेष नहीं रह जाता इसलिए भगवान की भक्ति में ध्यान लगाना श्रेयस्कर है।

''दूलह राम सीय दुलहीरी'' और ''सुभग सरासन सायक जोरे'' पद तुलसीकृत गीतावली से लिए गए हैं। पहले पद में राम और सीता के दुल्हा-दुलहिन रूप सौंदर्य का वर्णन किया गया है। दूसरे पद में धनुष धारण किए हुए वीर राम के सौंदर्य का वर्णन है। तुलसी ने इन पदों में सौंदर्य के विविध रूपों को दर्शाने का प्रयास किया है।

## सीता स्वयंवर

उदित उदय गिरि मंच पर, रघुबर बाल पतंग।
बिकसे संत सरोज सब, हरषे लोचन भृंग ।।1।।
नृपन्ह केरि आसा निसि नासी। बचन नखत अवली न प्रकासी।
मानी महिप कुमुद सकुचाने। कपटी भूप उलूक लुकाने।
भये बिसोक कोक मुनि देवा। बरिसहिं सुमन जनावहिं सेवा।
गुर पद बंदि सहित अनुरागा। राम मुनिन्ह सन आयेसु मागा।
सहजहि चले सकल जग स्वामी। मत्त मंजु बर कुंजर गामी।
चलत रामु सब पुर नर-नारी। पुलक पूरि तन भए सुखारी।
बंदि पितर सब सुकृत सँभारे। जौ कछु पुन्य प्रभाउ हमारे।
तौ सिवधनु मृनाल की नाईं। तोरहुँ रामु गनेस गोसाईं।।
रामहि प्रेम समेत लखि सखिन्ह समीप बोलाइ।
सीता मातु सनेह बस बचन कहै बिलखाई ।।2।।
सखि सब कौतुकु देख निहारे। जेउ कहावत हितू हमारे।
कोउ न बुझाइ कहै नृप पाहीं। ए बालक असि हठ भलि नाहीं।
रावन बान छुआ नहि चापा। हारे सकल भूप करि दापा।
सो धनु राजकुअर कर देहीं। बाल मराल कि मंदर लेहीं।
भूप सयानप सकल सिरानी। सखि बिधिगति कछु जाति न जानी।
बोली चतुर सखी मृदु बानी। तेजवंत लघु गनिअ न रानी।
कहँ कुंभज कहँ सिंधु अपारा। सोखेउ सुजसु सकल संसारा।
रविमंडल देखत लघु लागा। उदयँ तासु तिभुवन तम भागा।।
मंत्र परम लघु जासु बस बिधि हरि हर सुर सर्ब।
महा मत्त गजराज कहुँ बस कर अंकुस खर्ब ।।3।।
काम कुसुम धनु सायक लीन्हे। सकल भुवन अपने बस कीन्हे।
देवि तजिअ संसउ अस जानी। भंजब धनुषु राम सुनु रानी।

सखी बचन सुनि भै परतीती। मिटा विषादु बढ़ी अति प्रीती।
तब रामहि बिलोकि बैदेही। सभय हृदय बिनवति जेहि तेही।
मनही मन मनाव अकुलानी। होहु प्रसन्न महेस भवानी।
करहु सफल आपनि सेवकाई। करि हित हरहु चाप गरुआई।।
गननायक बरदायक देवा। आजु लगें कीन्हिउँ तुअ सेवा।
बार-बार बिनती सुनि मोरी। करहु चाप गुरुता अति थोरी।।
देखि देखि रघुबीर तन सुर मनाव धरि धीर।
भरे बिलोचन प्रेम जल पुलकावली सरीर।।4।।
नीकें निरखि नयन भरि सोभा। पितु पन सुमिरि बहुरि मनु छोभा।
अहह तात दारुनि हठ ठानी। समुझत नहि कछु लाभु न हानी।
सचिव सभय सिख देइ न कोई। बुध समाज बड़ अनुचित होई।
कहँ धनु कुलिसहु चाहि कठोरा। कहँ स्यामल मृदु गात किसोरा।
बिधि केहि भाँति धरौं उर धीरा। सिरिस सुमन कन बेधिऊ हीरा।
सकल सभा कै मति भै भोरी। अब मोहि संभुचाप गति तोरी।
निज जड़ता लोगन्ह पर डारी। होहि हरुअ रघुपतिहि निहारी।
अति परिताप सीय मन माहीं। लव निमेष जुग सय सम जाहीं।।
प्रभुहि चितइ पुनि चितव महि राजत लोचन लोल।
खेलत मनसिज मीन जुग जनु बिधु मंडल डोल।।5।।
गिरा अलिनि मुख पंकज रोकी। प्रगट न लाज निसा अवलोकी।
लोचन जलु रह लोचन कोना। जैसे परम कृपन कर सोना।
सकुची ब्याकुलता बड़ि जानी। धरि धीरजु प्रतीति उर आनी।
तन मन बचन मोर पनु साचा। रघुपति पद सरोज चितु राचा।
तौ भगवान सकल उर बासी। करिहिं मोहि रघुबर कै दासी।
जेहि कें जेहि पर सत्य सनेहू। सो तेहि मिलै न कछु संदेहू।
प्रभु तन चितै प्रेम पन ठाना। कृपानिधान राम सबु जाना।
सियहि बिलोकि तकेउ धनु कैसें। चितब गरुरु लघु ब्यालहि जैसें।।
लखन लखेउ रघुबंस मनि, ताकेउ हर कोदंडु
पुलकि गात बोले बचन चरन चापि ब्रह्मँडु।।6।।
दिसि कुंजरहु कमठ अहि कोला। धरहु धरनि धरि धीर न डोला।
रामु चहहिं संकर धनु तोरा। होहु सजग मुनि आयेसु मोरा।
चाप समीप रामु जब आए। नर नारिन्ह सुर सुकृत मनाए।

सब कर संसउ अरु अज्ञानू । मंद महीपन्ह कर अभिमानू ।
भृगुपति केरि गरब गरुआई। सुर मुनिबरन्ह केरि कदराई ।
सिय कर सोचु जनक पछितावा । रानिन्ह कर दारुन दुख दावा ।
संभु चाप बड़ बोहितु पाई । चढ़े जाइ सब संग बनाई ।
राम बाहु बल सिंधु अपारू । चहत पार नहि कोउ कँड़हारू ।।
राम बिलोके लोग सब चित्र लिखे से देखि ।
चितई सीय कृपायतन जानी बिकल बिसेखि ।।7।।
देखी बिपुल बिकल बैदेही । निमिष बिहात कलप सम तेही ।
तृषित बारि बिनु जो तनु त्यागा । मुयें करै का सुधा तड़ागा ।
का बरषा जब कृषी सुखाने । समय चूकें पुनि का पछिताने ।
अस जिय जानि जानकी देखी । प्रभु पुलके लखि प्रीति बिसेखी ।
गुरहि प्रनाम मनहि मन कीन्हा । अतिलाघव उठाइ धनु लीन्हा ।
दमकेउ दामिनि जिमि जब लयेऊ । पुनि नभ धनु मंडल सम भयेऊ ।
लेत चढ़ावत खैचत गाढ़ें । काहु न लखा देख सब ठाढें ।
तेहि छन राम मध्य धनु तोरा । भरे भुवन धुनि घोर कठोरा ।
भरे भुवन घोर कठोर रव रवि बाजि तजि मारगु चले ।
चिक्करहिं दिग्गज डोल महि अहि कोल कूरुम कलमले ।
सुर असुर मुनि कर कान दिन्हे सकल बिकल बिचारहीं ।
कोदंड खंडेउ राम तुलसी जयति बचन उचारहीं ।।
संकर चापु जहाजु सागरू रघुबर बाहु बलु ।
बूड़ सो सकल समाज चढ़ा जो प्रथमहि मोह बस ।।8।।
प्रभु दोउ चाप खंड महि डारे। देखि लोग सब भये सुखारे।
कौसिकरूप पयोनिधि पावन । प्रेम बारि अवगाह सुहावन ।
रामरूप राकेसु निहारी । बढ़त बीचि पुलकावलि भारी ।
बाजे नभ गहगहे निसाना। देवबंधू नाचहि करि गाना ।
ब्रह्मादिक सुर सिद्ध मुनीसा । प्रभुहि प्रसंसहि देहिं असीसा ।
बरिसहिं सुमन रंग बहुमाला । गावहिं किन्नर गीत रसाला ।
रही भुवन भरि जय जय बानी । धनुष भंग धुनि जात न जानी । .
मदित कहहिं जहँ तहँ नर नारी । भंजेउ राम संभुधनु भारी ।।
बंदी मागध सूत गन बिरिद बदहिं मति धीर ।
करहिं निछावरि लोग सब, हय गय मनि धन चीर ।।9।।

झाँझि मृदंग संख सहनाई। भेरि ढोल दुंदुभी सुहाई।
बाजहि बहु बाजनें सुहाए। जहँ-तहँ जुवतिन्ह मंगल गाए।
सखिन्ह सहित हरषीं अति रानी। सूखत धानु परा जनु पानी।
जनक लहेउ सुखु सोचु बिहाई। परत थके थाह जनु पाई।
श्रीहत भए भूप धनु टूटें। जैसे दिवस दीप छबि छूटें।
सीय सुखहि बरनिय केहि भाँती। जनु चातकी पाइ जलु स्वाती।
रामहि लखनु बिलोकत कैसें। ससिहि चकोर किसोरकु जैसें।
सतानंद तब आयेसु दीन्हा। सीता गमनु समीपहि कीन्हा।।
  संग सखीं सुंदर चतुर गावहि मंगलचार।
  गवनी बाल मराल गति, सुखमा अंग अपार।।10।।
सखिन्ह मध्य सिर सोहतिं कैसी। छबि गन मध्य महाछबि जैसी।
कर सरोज जयमाल सुहाई। बिश्व बिजय सोभा जेहिं छाई।
तन सकोच मन परम उछाहू। गूढ़ प्रेमु लखि परै न काहू।
जाइ समीप राम छबि देखी। रही जनु कुअरि चित्र अवरेखी।
चतुर सखीं लखि कहा बुझाई। पहिरावहु जयमाल सुहाई।।
सुनत जुगल कर माल उठाई। प्रेम बिबस पहिराइ न जाइ।
सोहत जनु जुग जलज सनाला। ससिहि सभीत देत जयमाला।
गाविहिं छबि अवलोकि सहेली। सिय जयमाल राम उर मेली।।
  रघुबर उर जयमाल देखि देव बरिसहि सुमन।
  सकुचे सकल भुआल जनु बिलोकि रबि कुमुद गन।।11।।

— रामचरितमानस (बालकांड)

## पद

### (क)

कबहुँक हौं यहि रहनि रहौंगो।
श्री रघुनाथ-कृपालु-कृपा तें संत सुभाव गहौगो।।

जथालाभ संतोष सदा काहू सौं कछु न चहौंगो।
परहित-निरत निरंतर मन क्रम बचन नेम निबहौंगो।
परुषबचन अतिदुसह स्रवन सुनि तेहि पावक न दहौंगो।
बिगत मान, सम सीतल मन, पर-गुन, नहिं दोष कहौंगो ।।
परिहरि देहजनित चिंता, दुख सुख समबुद्धि सहौंगो।
तुलसीदास प्रभु यहि पथ रहि अबिचल हरिभक्ति लहौंगो।

## (ख)

मन पछितैहे अवसर बीते।
दुर्लभ देह पाइ हरिपद भजु करम बचन अरु ही ते ।।
सहसबाहु, दसबदन आदि नृप बचे न काल बली ते।
हम हम करि धन धाम सँवारे, अंत चले उठि रीते।
सुत, बनितादि जानि स्वारथ-रत न करु नेह सबही तें।
अंतहुँ तोहिं तजैगे, पामर ! तू न तजै अबही तें ।।
अब नाथहिं अनरागु जागु जड़, त्यागु दुरासा जी तें।
बुझै न काम-अगिनि तुलसी कहुँ विषय-भोग बहु घी तें ।।

— विनयपत्रिका

## (ग)

दूलह राम, सीय दुलही री।
घन-दामिनि-बर बरन, हरन-मन सुंदरता नखसिख निबही, री ।।1।।
ब्याह-विभूषन - बसन - विभूषित, सखि-अवली लखि ठगि सी रही, री।।
जीवन-जनम-लाहु लोचन-फल है इतनोइ, लह्यो आजु सही, री ।।2।।
सुखमा, सुरभि सिंगार-छीर दुहि, मयन अमिय-मय कियो है दही, री।
मथि माखन सिय राम सँवारे, सकल–भुवन छबि मनहुँ मही, री ।।3।।
तुलसीदास जोरी देखत सुख सोभा, अतुल न जाति कही, री।
रूप रासि बिरची बिरंचि नो, सिला लवनि रति काम लही, री ।।4।।

## (घ)

सुभग सरासन सायक जोरे।
खेलत राम फिरत मृगया बन, बसति सो मृदु मूरति मन मोरे।
पीत बसन कटि, चारु चारि सर, चलत कोटि नट सो तृन तोरे।
स्यामल तनु स्रम-कन राजत ज्यों, नव घन सुधा सरोवर खोरे।
ललित कंठ, बर भुज, बिसाल उर, लेहिकंठ रेखैं चित चोरे।
अवलोकित मुख देत परम सुख, लेत सरद-ससि की छवि छोरे।।
जटा मुकुट सिर सारस-नयननि, गौहें तकत सुभोह सकोरे।
सोभा अमित समाति न कानन, उमगि चली चहुँ दिसि मिति फोरे।
चितवन चकित कुरंग कुरंगिनि, सब भए मगन मदन के भोरे।।
तुलसीदास प्रभु बान न मोचत, सहज सुभाय प्रेमबस मोरे।।

— गीतावली

## प्रश्न-अभ्यास

### सीता स्वयंवर

1. धनुषयज्ञ के आयोजन के संबंध में सीता की मॉ और सीताजी के मन में जो शंकाएँ हैं, उनका वर्णन कीजिए।
2. स्वयंवर में राम को देखकर सुनयना की व्याकुलता का परिचय दीजिए।
3. ''तेजवंत लघु गनिय न रानी'' के समर्थन में चतुर सखी ने क्या- क्या तर्क दिए हैं ?

   'शंभुचाप बड़ बोहित पाई'' के रूपक को स्पष्ट कीजिए।
4. सीता के विचार से बुद्धिमानों की सभा में बड़ा अनुचित क्या दिखाई पड़ा ?
5. धनुभँग के पूर्व सीता की व्याकुतला एवं क्षोभ के क्या कारण है ?
6. राम को जयमाल पहनाती सीता के संदर्भ में कवि द्वारा की गई उत्प्रेक्षा का चित्रांकन कीजिए।
7. राम रूपी सूर्य के मंच पर उदित होने से निम्नलिखित पर क्या प्रभाव लक्षित हुए:

   (क) संत

   (ख) घमंडी राजा

   (ग) मुनि जन

   (घ) देवता
8. निम्नलिखित उपमानों के उपमेय बनाइए :

   बाल पंतग, सरोज, कुमुद, उलूक, जलज, सनाला, बाल भराल
9. काव्य सौंदर्य स्पष्ट कीजिए :

   (क) प्रभुहि चितइ पुनि चितव महि राजत लोचन लोल।
   खेलत मनसिज मीन जुग जनु बिधु मण्डल डोल ।।

   (ख) गिरा अलिनि मुख पंकज रोकी।
   प्रकट न लाज निसा अवलोकी।।
   लोचन जलु रह लोचन कोना।
   जैसे परम कृपन कर सोना।।

(ग) सुनत जुगल कर माल उठाई।
प्रेम बिबस पहिराइ न जाई।।
सोहत जनु जुग जलज सनाला।
ससिहि सभीत देत जयमाला।।

10. निम्नलिखित पंक्तियों में आए अलंकारों का निर्देश कीजिए

(क) उदित उदय गिरि मंच पर रघुवर बाल पतंग।
बिकसे संत सरोज सब हरषे लोचन भृंग।।

(ख) नृपंह केरि आसा निसि नासी।
वचन नखन अवली न प्रकासी।।

(ग) गिरा अलिनि मुख पकंज रोकी।
प्रगट न लाज निसा अवलोकी।।

(घ) प्रभुहि चितई पुनि चितवमहि राजत लोचन लोल।
खेलत मनसिज मीन जुग जनु बिधु मंडल डोल।।

(ड.) सोहत जनु जुग जलज सनाला।
ससिहि सभीत देत जयमाला।।

## पद

1. "कबहुँक हौं यहि रहिनि रहौंगो," पद में तुलसी ने किस प्रकार का जीवन बिताने का संकल्प किया है ?
2. कवि किस पथ का अनुगमन कर अविचल हरि भक्ति प्राप्त करना चाहता है ?
3. कवि ने हरि भजन क्यों आवश्यक बतलाया है ?
4. अवसर बीत जाने पर मनुष्य को पछताना पड़ता है, इसके लिय कवि ने क्या-क्या तर्क दिए हैं ?
5. दूल्हा-दूल्हन के रूप में राम और सीता के रूप-सौंदर्य का वर्णन कीजिए।
6. कवि ने राम सीता की अनुपम शरीर-रचना का वर्णन किस प्रकार किया है ?
7. दूलह राम एवं धनुर्धर राम तुलसीदास कृत दो शब्द-चित्र हैं। दोनों में निहित वर्णन-भेद को स्पष्ट कीजिए।
8. काव्य सौंदर्य स्पष्ट कीजिए :
सुखमा सुरभि सिंगार छीर दुहि, मयन अमिय मय कियो है दही, री
मथि माखन सिय राम सँवारे-सकल भुवन छबि मनहु मही, री
रूप रासि बिरची बिरंचि मनो, सिला लवनि रति काम लही, री
9. अलंकार स्पष्ट कीजिए :

(क) धन दामिनि बर बरन हरन मन सुंदरता नखसिख निबही, री।
ब्याह-विभूषन-बसन-विभूषित-सखि अवली लीख ठगि सी रही, री।।
स्यामल तनु स्रम—कन राजत ज्यों, नव धन सुधा—सरोवर खोरे।

# सेनापति

सेनापति का जीवनकाल लगभग सन् 1584-1688 माना जाता है। वे अनूप शहर के रहने वाले थे। ऐसा अनुमान है कि उनकी मृत्यु सत्रहवीं शताब्दी के अंतिम चरण के आसपास हुई थी।

सेनापति के बारे में प्रामाणिक रूप से अधिक जानकारी नहीं मिलती किंतु उन्होंने अपनी पुस्तक 'कवित्त रत्नाकर' में अपने तथा अपने परिवार के बारे में वर्णन किया है। ऐसा कहा जाता है कि उनके पिता का नाम गंगाधर दीक्षित था।

सेनापति भक्तिकाल के सगुणधारा के अंतर्गत माने जाते हैं, किंतु रीतिकालीन कविताओं की विशेषताएँ भी उनकी कविताओं में मिलती हैं। वस्तुतः उनका रचनाकाल रीतिकाल के आरंभ से थोड़ा पहले माना जाता है। उन्होंने अपने 'कवित्त रत्नाकर' में रस छँद, अलंकार और ध्वनि का यथास्थान उपयुक्त प्रयोग किया है। वे मुख्य रूप से रामभक्त थे, किंतु उनकी रचनाओं में कृष्ण तथा शिवँ संबंधी छंद भी मिलते हैं। वे अपने समकालीन कवियों की बातें दोहराना उचित नहीं समझते थे इसलिए स्वाभिमानी कवि के रूप में सेनापति का नाम बड़े गौरव के साथ लिया जाता है। उनके अंदर आत्मसम्मान कूट-कूटकर भरा था। सांसारिक सुखों की वे कदापि चिंता नहीं करते थे।

उन्होंने 'कवित्त रत्नाकर' में वीर, रौद्र, श्रृंगार, भयानक और शांत रसों का प्रयोग किया है। सेनापति ने ऋतुओं का बहुत ही जीवंत चित्रण किया है। विरह वर्णन में अत्युक्तिपूर्ण चित्रण अधिक नहीं मिलता, किंतु उन्होंने ऋतुओं से विरही की दशा को जोड़ने का प्रयास किया है।

मुख्य रूप से सेनापति के लिखे दो ग्रंथ बताए जाते हैं – ''काव्य कल्पद्रुम'' और 'कवित्त रत्नाकर'। 'कवित्त रत्नाकर' उनका प्रचलित

ग्रंथ है, किंतु काव्य कल्पद्रुम के बारे में अधिक जानकारी नहीं मिलती। सेनापति की भाषा भावों को प्रकट करने में पूर्णतया सक्षम है। उनकी भाषा में ब्रजभाषा का माधुर्य है। अनुप्रास और यमक का उन्होंने अपनी रचनाओं में सार्थक प्रयोग किया है, जिससे कविता में जीवंतता आ गई है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल के शब्दों में "इनकी कविता बहुत मर्मस्पर्शिनी और रचना बहुत ही प्रौढ़ और प्रांजल है। जैसे एक ओर इनमें पूरी भावकुता थी वैसे ही दूसरी ओर चमत्कार लाने की बड़ी निपुणता भी।"

'ऋतु वर्णन' के अंतर्गत षट्ऋतुओं (वसंत, हेमंत, शरद, ग्रीष्म, शीत, शिशिर) पर सेनापति के 6 कवित्त दिए गए हैं। इनमें कवि की सहृदयता, पर्यवेक्षण- कुशलता, अनुप्रास-झंकृत पद-चयन, उपमाओं और उत्प्रेक्षाओं का चमत्कार तथा चित्रात्मक दृश्य-अंकन देखते ही बनता है। रीतिकाल में इस प्रकार का प्रकृति-वर्णन अन्यत्र दुर्लभ है।

# ऋतु-वर्णन

## वसंत

बरन बरन तरु फूले उपवन बन,
सोई चतुरंग संग दल लहियत है।
बंदी जिमि बोलत बिरद बीर कोकिल हैं,
गुंजत मधुप गान गुन गहियत है।।
आवै आस-पास पुहुपन की सुबास सोई
सौंधे के सुगँध माँझ सने रहियत है।
सोभा कौं समाज, सेनापति सुख-साज, आज
आवत बसंत रितुराज कहियत है।

## हेमंत

दामिनी दमक सोई मंद बिहसनि, बग-
माल है बिसाल सोई मोतिन कौं हारौ है।
बरन बरन घन रंगित बसन तन,
गरज गरूर सोई बाजत नगारौ है।।
सेनापति सावन कौं बरसा नवल वधू,
मानौं है बरति साजि सकल सिंगारौ है।
त्रिबिध बरन परयौ इंद्र कौं धनुष, लाल
पन्ना सौं जटित मानौं हेम खगवारौ है।।

## शरद

कातिक की राति थोरी थोरी सियराति, सेना-
पति है सुहाति सुखी जीवन के गन हैं।
फूले हैं कुमुद, फूली मालती सघन बन,
फूलि रहे तारे मानौं मोती अनगन हैं।।
उदित बिमल चंद, चाँदनी छिटकि रही,
राम कैसौ जस अध ऊरध गगन हैं।
तिमिर हरन भयौ, सेत है बरन सब,
मानहु जगत छीर-सागर मगन हैं ।।

## ग्रीष्म

बृष कौं तरनि तेज सहसौ किरन करि
ज्वालन के जाल बिकराल बरसत है।
तचति धरनि, जग जरत झरनि सीरी
छाँह कौं पकरि पंथी-पंछी बिरमत है ।।
सेनापति नैंक दुपहरी के ढरत, होत
धमका विषम, ज्यौं न पात खरकत है।
मेरे जान पौनों सीरी ठौर कौं पकरि कौनों,
घरी एक बैठि कहूँ घामै बितवत है।।

## शीत

सीत कौं प्रबल सेनापित कोपि चढ़यौ दल,
निबल अनल, गयौ सूर सियराइ कै।
हिम के समीर, तेई बरसैं बिषम तीर,
रही है गरम भौन कोनन मैं जाइ कै ।।

धूम नैनन बहैं, लोग आगि पर गिरे रहैं,
हिए सौं लगाए रहैं नैंक सुलगाइ कै।
मानौभीत जानि, महा सीत तैं पसारि पानि।
छतियाँ की छाँह राख्यौ पाउक छिपाइ कै।।

## शिशिर

सिसिर मैं ससि कौं सरूप पावै सविताऊ,
घाम हू मैं चाँदनी की दुति दमकति है।
सेनापति होत सीतलता (?) है सहस गुनी,
रजनी की झाँई बासर (?) मैं झमकति है।।
चाहत चकोर, सूर ओर दृग-छोर करि,
चकवा की छाती तजि धीर धसकति है।
चंद के भरम होत मोद है कमोदिनी कौं,
ससि संक पंकजिनी फूलि न सकति है।।

## प्रश्न-अभ्यास

1. कवि ने अपने काव्यात्मक वर्णन से किस प्रकार सिद्ध किया है कि वसंत सामान्य ऋतु न होकर ऋतुओं का राजा है ?
2. भीषण गरमी में दुपहरी के ढलने की स्थिति का कवि ने किस प्रकार चित्रण किया है ?
3. वर्षा-वर्णन में सेनापति ने वर्षा-वधू का जो सुंदर रूपक प्रस्तुत किया है उसे स्पष्ट कीजिए।
4. कवि के अनुसार शरद में प्रकृति-सौंदर्य किस-किस रूप में निखर उठता है ?
5. भाव स्पष्ट कीजिए :

   (क) शीत को प्रबल सेनापति कोपि चढ़यौ दल
   निबल, अनल, गायै सूर सिमराइ कै।

   (ख) चंद के भरम होत मोद है कमोदनी कौं
   ससि संक पंकजिनी फूलि न रुकति है।
6. काव्य-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए :

   (क) मेरे जान पौनौं सीरी ठौर को पकरि कौनौं
   धरि एक बैठि कहूँ घामै बितवत है।

   (ख) मानौ भीत जानि, महा सीत तै पसारि पानि,
   छतिया की छाँह राख्यौ पाउक छिपाइ कै।
7. निम्नलिखित में कौन-सा प्रमुख अलंकार कहाँ आया है, रेखाँकित कीजिए :

   (क) राम कैसौ जस अध उरध गगन हैं।

   (ख) तिमिर हरन भयौ, सेत है बरन सब
   मानहु जगत छीर सागर मगन हैं।

   (ग) सिसिर मैं ससि कौं सरूप पावै सविताऊ
8. सेनापति के षट्ऋतु वर्णन में आपको किस ऋतु की कौन-सी उक्ति सबसे अधिक चमत्कार पूर्ण लगी और क्यों ?

# पद्माकर

पद्माकर (1753-1833 ई.) रीतिकाल के अंतिम श्रेष्ठ कवि थे। वे बाँदा निवासी मोहनलाल भट्ट के पुत्र थे। उनके परिवार का वातावरण कवित्वमय था। उनके पिता के अलावा उनके कुल के अन्य लोग भी कवि थे, अतः उनके वंश का नाम ही 'कवीश्वर' पड़ गया था। वे अनेक राज-दरबारों में रहे। बूँदी दरबार की ओर से उन्हे बहुत सम्मान, दान आदि मिला। पन्ना महाराज ने उन्हें बहुत से गाँव दिए। जयपुर नरेश से उन्हें 'कविराज शिरोमणि' की उपाधि मिली। उनकी रचनाओं में 'हिम्मतबहादुर विरुदावली', 'पद्माभरण', ' जगद्विनोद' और 'राम रसायन' मुख्य हैं।

पद्माकर ने सजीव मूर्तविधान करने वाली कल्पना के सहारे प्रेम और सौंदर्य का मार्मिक चित्रण किया है। जगह-जगह लाक्षणिक शब्दों के प्रयोग द्वारा वह सूक्ष्म-से-सूक्ष्म भावनुभूतियों को सहज ही मूर्तिमान कर देते हैं। उनके ऋतु-वर्णन में भी इसी जीवतँता और चित्रात्मकता के दर्शन होते हैं। भाषा उनकी चलती हुई है और अर्थ के अनुरूप स्वरूप धारण करती चलती है। अनुप्रास द्वारा ध्वनिचित्र खड़ा करने में वे अद्वितीय हैं। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने उनकी भाषागत शक्ति और अनेकरूपता की तुलना तुलसीदास की भाषागत विविधता से की है। यह उनके काव्य की बहुत बड़ी शक्ति की ओर संकेत करता है।

यहाँ पद्माकर के पाँच कवित्त और एक सवैया दिया गया है। इनमें पद्माकर ने प्रकृति-चित्रण के माध्यम से बड़ी सरस और अनूठी श्रृंगार-व्यजनाएँ की हैं। प्रकृति की एक-एक अल्हड़ और मादक भंगिमा अतंर के तार-तार कैसे प्रकंपित और आकुल कर देती है, इसका वर्णन कवि ने अनुप्रासमयी और ध्वनि झंकृत भाषा में किया है। साथ ही दूसरी रचनाओं में फाग की रंगभरी मस्ती से सराबोर ब्रज की होली के सरस चित्र मनोहारी बन पड़े हैं।

## प्रकृति एवं शृंगार

औरै भाँति कुंजन में गुंजरत भीर भौंर,
औरै डौर झौरन पैं बौरन के ह्वै गए।
कहै पद्माकर सु औरै भाँति गलियानि,
छलिया छबीले छैल औरै छबि छ्वै गए।
औरै भाँति बिहग-समाज में अवाज होति,
ऐसे रितुराज के न आज दिन द्वै गए।
औरै रस औरै रीति औरै राग औरै रंग,
औरै तन औरै मन औरै बन ह्वै गए।।1।।

चंचला चलाकैं चहूँ औरन तें चाहभरी,
चरजि गई तीं फेरि चरजन लागीं री।
कहै पद्माकर लवंगन की लोनी लता,
लरजि गई तीं फेरि लरजन लागीं री।
कैसे धरौं धीर वीर त्रिबिध समीर तन,
तरजि गई तीं फेरि तरजन लागीं री।
घुमड़ि घमुड़ि घटा घन की घनेरी अबै,
गरजि गई तीं फेरि गरजन लागीं री।।2।।

गोकुल के कुल के गली के गोप गाउन के
जौ लगि कछू-को-कछू भाखत भनै नहीं
कहै पद्माकर परोस-पिछवारन के,
द्वारन के दौरि गुन-औगुन गनैं नहीं
तौ लौं चलि चतुर सहेली याहि कोऊ कहुँ,

नीके कै निचौरे ताहि करत मनै नहीं हौं तो
स्याम-रंग में चुराइ चित चोराचोरी,
बोरत तौं बोर्‌यो पै निचोरत बनै नहीं ।।3।।
फाग के भीर अभीरन तें, गहि गोबिन्द लै गई भीतर गोरी।
माई करी मन की पद्माकर, ऊपर नाई अबीर की झोरी।
छीन पितम्बर कम्मर तें, सु बिदा दई मीड़ि कपोलन रोरी।
नैन नचाइ, कही मुसकाइ, लला फिरि आइयौ खेलन होरी ।।4।।

चालौ सुनि चंदमुखी चित्त में सु चैन करि,
तित बन बागनि घनेरे अली घूमि रहे।
कहै पद्माकर मयूर मंजु नाचत हैं,
चाह सों चकोरिन चकोर भूमि चूमि रहे।
कदम अनार आम अगर असोक थोक,
लतनि समेत लौने-लौने लगि झूमि रहे।
फूलि रहे, फलि रहे, फैलि रहे फबि रहे,
झपि रहे, झालि रहे, झुकि रहे, झूमि रहे।।5।।

भौंरन को गुंजन बिहार बन कुंजन में
मंजुल मलारन को गावनो लगत है।
कहै पद्माकर गुमानहूँ तें मानहुँ तैं
प्रानहूँ तैं प्यारो मनभावनो लगत है
मोरन को सोर घनघोर चहुँ ओरन,
हिंडोरन को बृन्द छवि छावनो लगत है
नेह सरसावन में मेह बरसावन में,
सावन में झूलिबो सुहावनो लगत है ।।6।।

— **पद्माकर ग्रंथावली से**

## प्रश्न-अभ्यास

1. कवि ने वसंत के आगमन का वर्णन करते हुए बार -बार ''औरे भाँति'' अथवा ''भौरें'' की आवृत्ति क्यों की है ?
2. ''चंचला चलाके ,... गरजन लागी री'' कवित्त के काव्य-सौंदर्य पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।
3. काव्य-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए:
   (क) हौं तो स्याम रंग में चुराई चित चोरा-चोरी,
   बौरत तौं बोर्‌यौ पै निचोरत बनै नहीं।
   (ख) नैन नचाइ, कही मुसकाई, लला फिरि आइयौ खेलन होरी।
   (ग) फूलि रहे, फलि रहे, फैलि रहे फबि रहे,
   झपि रहे, झालि रहे, झुलि रहे, झूमि रहे ॥
4. पद्‌माकर के काव्य में अनुप्रास की छटा दर्शनीय है — उक्त कथन की यथार्थता सोदाहरण सिद्ध कीजिए।
5. पद्‌माकर के फाग-वर्णन में चित्रित भाव-सौंदर्य पर टिप्पणी कीजिए।
6. संकलित कवित्त सवैयों के आधार पर सिद्ध कीजिए कि पद्‌माकर प्रेम और उल्लास के कुशल कवि हैं।
7. भाव स्पष्ट कीजिए :
   तौ लौं चलि चतुर सहेली याहि कोउ कहूँ,
   नीके कै निचौरे ताहि करत मनै नहीं
8. सेनापति और पद्‌माकर के वसंत वर्णनों पर एक तुलनात्मक टिप्पणी लिखिए।

# जगन्नाथदास 'रत्नाकर'

'रत्नाकर' आधुनिक काल में ब्रजभाषा के सर्वश्रेष्ठ कवि माने जाते हैं। उनका जन्म वाराणसी के एक संपन्न वैश्य परिवार में सन् 1866 में हुआ था। उनके पिता श्री पुरुषोत्तमदास फारसी के विद्वान थे तथा हिंदी के युग निर्माता भारतेंदु के प्रगाढ़ मित्र थे। इन दोनों का प्रभाव 'रत्नाकर' पर पड़ा। बी.ए. पास करने के पश्चात् उन्होंने फ़ारसी लेकर एम.ए. की तैयारी की, किंतु बीमारी के कारण परीक्षा न दे सके। बाल्यावस्था में 'रत्नाकर' ज़को उपनाम से फ़ारसी में कविता करते थे, लेकिन आगे चल कर उन्होंने हिन्दी को ही अपने काव्य का माध्यम बनाया। भारतेन्दु बाबू की गोष्ठियों के प्रभाव-स्वरूप हिन्दी कविता का जो बीज 'रत्नाकर' के हृदय में अंकुरित हुआ था, वही अंततः पल्लवित और पुष्पित हुआ। उनका निधन सन् 1932 में हुआ।

सर्वप्रथम उन्होंने अवागढ़ रियासत में खजाने के निरीक्षक-पद पर काम किया और फिर कुछ समय पश्चात् अयोध्यानरेश ने उन्हें अपने निजी सचिव के रूप में नियुक्त किया। वहाँ वे अनेक विद्वानों के संपर्क में आए तथा विविध विषयों का ज्ञान प्राप्त किया। यही कारण है कि उनके काव्य में वैद्यक, रसायन, मनोविज्ञान, वेदांत, योगदर्शन आदि की छाप स्पष्टतः लक्षित होती है।

आधुनिक काल के कवि होते हुए भी उन्होंने भक्ति और रीति शैली में ही काव्य रचना की। 'रत्नाकर' के काव्य में जहाँ एक ओर भक्ति की धारा प्रवाहित है वहाँ दूसरी ओर मानव स्वभाव का मनोवैज्ञानिक चित्रण भी उपलब्ध होता है। नवीन प्रभावों को उन्होंने ग्रहण तो किया पर अभिव्यंजना की शैली प्राचीन ही रही। प्रांजल एवं परिष्कृत ब्रजभाषा को उन्होंने अपनी काव्य-भाषा के रूप में स्वीकार किया है।

'उद्धवशतक' रत्नाकर की सर्वश्रेष्ठ काव्य-कृति है। उसके अतिरिक्त

'गंगावतरण' तथा 'हरिश्चंद' अन्य प्रसिद्ध रचनाएँ हैं। उन्होंने 'बिहारी रत्नाकर' नाम से 'बिहारी सतसई' की प्रामाणिक और विशद टीका भी लिखी है।

## उद्धव का मथुरा लौटना

श्रीकृष्ण के मथुरा चले जाने पर ब्रज के लोग बहुत दुखी थे। उन्हें ज्ञान-योग का उपदेश देने के लिये कृष्ण ने अपने परम मित्र और निर्गुण भक्ति के व्याख्याता उद्धव को भेजा; किंतु प्रेम-विभोर गोपियों के प्रेम और सहज तर्कों ने उनका सारा ज्ञान-गर्व चकनाचूर कर दिया और वे स्वयं प्रेम- विभोर होकर मथुरा लौट पड़े। 'उद्धव शतक' से उद्‌धृत प्रस्तुत कवित्तों के वर्ण्य-विषय हैं ब्रज से उद्धव की विदा, प्रेम-विभोर गोपियों की दशा और उद्धव पर गोपियों के प्रेम का प्रभाव।

## 'भीष्म प्रतिज्ञा'

महाभारत के युद्ध में सम्मिलित होने से पूर्व श्रीकृष्ण ने प्रतिज्ञा की थी कि वे युद्ध में स्वयं अस्त्र-शस्त्र नहीं उठायेंगे। इस पर अपनी प्रतिक्रिया में भीष्म ने भी प्रतिज्ञा की थी कि मैं युद्ध में कृष्ण से अस्त्र-शस्त्र उठवाकर रहूँगा। अपनी प्रतिज्ञा को पूर्ण करने के लिए भीष्म ने भयानक युद्ध करके ऐसी स्थिति पैदा कर दी कि कृष्ण एक टूटे रथ का पहिया उठा-कर भीष्म को मारने दौड़े। प्रस्तुत कवित्तों में भीष्म की युद्ध-गर्वोक्ति, उनके पराक्रम और कृष्ण की विषम स्थिति का अत्यंत सुंदर चित्रण हुआ है।

## उद्धव का मथुरा लौटना

धाईं जित तित तैं बिदाई हेत ऊधव की,
गोपी भरीं आरति सँभारति न साँसु री।
कहै रतनाकर मयूर-पच्छ, कोऊ लिए,
कोऊ गुंज-अंजुली उमाहै प्रेम-आँसु री।
भाव-भरी कोऊ लिए रुचिर सजाव दही,
कोऊ मही मंजु दाबि दलकति पाँसुरी।
पीत पट नंद जसमुति नवनीत नयौ,
कीरति-कुमारी सुरवारी दई बाँसरी ।।1।।

कोऊ जोरि हाथ कोऊ नाइ नम्रता सौं माथ,
भाषन की लाख लालसा सौं नहि जात हैं।
कहै रतनाकर चलत उठि ऊधव के,
कातर ह्वै प्रेम सौं सकल महि जात हैं।
सबद न पावत सो भाव उमगावत जो,
ताकि-ताकि आनन ठगे से हठि जात हैं।
रंचक हमारी सुनौ रंचक हमारी सुनौ,
रंचक हमारी सुनौ कहि रहि जात हैं।।2।।

गोपी, ग्वाल, नंद, जसुदा सौं तो बिदा ह्वै उठे,
उठत न पाय पै उठावत डगत हैं।
कहै रतनाकर सँभारि सारथी पै नीठि,
दीठिनि बचाइ चल्यो चोर ज्यौं भगत हैं।
कुँजनि की कूल की कलिंदी की रुऐंदी दसा,
देखि-देखि आँस औ उसाँस उमगत हैं।

रथ तैं उतरि पथ पावन जहाँ हीं तहाँ,
बिकल बिसूरि धूरि लोटन लगत हैं।।3।।आए लौटि
लज्जित नवाए नैन ऊधौ अब,
सब सुख साधन कौ सूधौ सौ जतन लै।
कहै रतनाकर गँवाए गुन गौरव ओ,
गरब-गढ़ी कौ परिपूरन पतन लै।।
छाए नैन नीर पीर-कसक कमाए उर,
दीनता अधीनता के भार सौं.नतन लै।
प्रेम-रस रुचिर बिराग-तूमड़ी मैं पूरि,
ज्ञान-गूदड़ी मैं अनुराग सौ रतन लै।।4।।

प्रेम मद-छाके पग परत कहाँ के कहाँ
थाके अंग नैननि सिथिलता सुहाई है
कहै रतनाकर यौं आवत चकात ऊधौ,
मानौ सुधियात कोऊ भावना भुलाई है।।
धारत धरा पै ना उदार अति आदर सौं,
सारत बँहोलिनि जो आँस-अधिकाई है।
एक कर राजै नवनीत जसुदा कौ दियौ,
एक कर बंसी बर राधिका पठाई है।।5।।

आँसुनि की धार औ उभार कौं उसाँसनि के,
तार हिचकीनि के तनिक टरि लेन देहु
कहै रतनाकर फुरन देहु बात रंच,
भावनि के विषम प्रपंच सरि लेन देहु।।
आतुर ह्वै और हू न कातर बनावौ नाथ,
नैसुक निवारि पीर धीर धरि लेन देहु।
कहत अबै हैं कहि आवत जहाँ लौ सबै,
नैंकु थिर कढ़त करेजौ करि लेन देहु।।6।।

ज्वालामुखी गिरि तैं गरत द्रवे द्रब्य कैधौ,
बारिद पियो है बारि विष के सिवाने मैं।

कहै रतनाकर कै काली दाँव लेन-काज,
फेन फुफकारै उहिं गाँव दुख साने मैं ।।
जीवन बियोगिनि कौ मेघ अँचयो सो किधौं,
उपच्यौ पच्यो न उर ताप अधिकानै मैं।
हरि-हरि जासौं बरि-बरि सब बारी उठैं,
जानैं कौन बारि बरसत बरसाने मैं।।7।।

छावते कुटीर कहूँ रम्य जमुना कै तीर,
गौन रौन-रेती सौं कदापि करते नहीं।
कहै रतनाकर बिहाइ प्रेम-गाथा गूढ़,
स्रौन रसना मैं रस और भरते नहीं।।
गोपी ग्वाल बालनि के उमड़त आँसू देखि,
लेखि प्रलयागम हूँ नैंकु डरते नहीं
होतौ चित चाव जौ न रावरे चितावन कौ
तजि ब्रज गाँव इतै पाव धरते नहीं।।8।।

## भीष्म-प्रतिज्ञा

भीषम भयानक पुकार्‌यो रन-भूमि आनि,
छाई छिति छत्रिनि की गीति उठि जाइगी।
कहै रतनाकर रुधिर सौं रुँधैगी धरा,
लोथनि पै लोथनि की भीति उठि जाइगी।।
जीति उठि जाइगी अजीत पंडु-पूतनि की,
भूप दुरजोधन की भीति उठि जाइगी।
कैतौ प्रीति-रीति की सुनीति उठि जाइगी, कै
आज हरि-प्रन की प्रतीति उठि जाइगी ।।1।।

भीषम के बाननि की मार इमि माँची गात,
एकहूँ न घात सव्यसाची करि पावै है।
कहै रतनाकर निहारि सो अधीर दसा,

त्रिभुवन-नाथ-नैन नीर भरि आवै है।।
बहि बहि हाथ चक्र-ओर ठहि जात नीठि,
रहि रहि तापै बक्र दीठि पुनि धावै है।
इत प्रन-पालन की कानि सकुचावै उत,
भक्त-भय-धालन की बानि उमगावै है।।2।।

छूट्यौ अवसान मान सकल धनंजय कौ,
धाक रही धनु मैं न साक रही सर मैं।
कहै रतनाकर निहारि करुनाकर कैं,
आई कुटिलाई कछु भौंहनि कगर मैं।।
रोकि झर रंचक अरोक बर बाननि की,
भीषम यौं भाष्यौ मुसकाइ मंद स्वर मैं।
चाहत बिजै कौं सारथी जौ कियौ सारथ, तौ
वक्र करौ भृकुटी न, चक्र करो कर मैं।।3।।

## प्रश्न-अभ्यास

**उद्धव का मथुरा लौटना**

1. संकलित कवित्तो के आधार पर उद्धव की भाव-भीनी विदाई का वर्णन कीजिए।
2. दूसरे कवित्त के आधार पर विदा के समय गोपियों की भाव विह्वलता का वर्णन कीजिए।
3. उद्धव नज़र बचाकर चोर की तरह वृंदावन से क्यों भाग रहे थे।
4. उद्धव गोपियों के लिए अभिमानपूर्वक क्या लेकर गए थे और आँखें झुकाए क्या लेकर लौटे, कारण सहित बताइए।
5. "सारत बॅहोलिनि जो ऑसु अधिकाई है" — की स्थिति का कारण क्या था ?
6. कृष्ण को वृंदावन की स्थिति का विवरण देने में उद्धव क्यों असमर्थ हो रहे थे?
7. काव्य-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए :
   (क) रंचक हमारी सुनौ रंचक हमारी सुनौ
   रंचक हमारी सुनौ कहि रहि जात है
   (ख) प्रेम रस रुचिर बिराग-तूमड़ी मैं पूरि,
   ज्ञान-गूदड़ी में अनुराग सौ रतन लै।
8. भाव स्पष्ट कीजिए :
   (क) सबद न पावत सो भाव उमगावत जो,
   ताकि-ताकि आनन ठगे से हठि जात हैं।
   (ख) कहै रतनाकर यौं आवत चकात ऊधौ,
   मानौ सुधियात कोऊ भावना भुलाई है।
9. इन कवित्तों में सबसे मार्मिक और कवित्वमय आपको कौन-सा कवित्त लगा और क्यों ? उस कवित्त को लय के साथ कक्षा में सुनाइए।

**भीष्म-प्रतिज्ञा**

1. कृष्ण के विरुद्ध भीष्म की क्या प्रतिज्ञा थी। उस प्रतिज्ञा की पूर्ति उन्होंने किस

प्रकार की ?

2. भीष्म ने युद्ध भूमि में आते ही क्या गर्वोक्ति की ?
3. उन पंक्तियों को उद्धृत करो जिनमें धर्म-संकट में फँसे कृष्ण की दुविधा का मर्मस्पर्शी चित्रण किया गया है ?
4. भीष्म ने कृष्ण को उनकी दुविधापूर्ण स्थिति से उबारने के लिये क्या चतुराई-भरा सुझाव दिया ?
5. काव्य सौंदर्य स्पष्ट करो :

   (क) छाई छिति छत्रिनि की गीति उठि जाइगी।

   (ख) जीति उठि जाइगी अजीत पंडु पूतनि की

   (ग) चाहत बिजै कौ सारथी जौ कियौ सारथ,
   तो तौ बक्र करौ भृकुटी न, चक्र करो कर में
6. भाव स्पष्ट कीजिए :

   कहै रतनाकर रुधिर सौं रुँधैगी धरा,
   लोथनि पै लोथनि की भीति उठि जाइगी
7. पहले कवित्त में कवि की अलंकार-योजना पर टिप्पणी कीजिए।
8. "उद्धव का मथुरा लौटना" और "भीष्म प्रतिज्ञा" में रतनाकर की भाषा के विविध गुण क्या-क्या हैं? रतनाकर किस भाषा-गुण से आपको अधिक अभिभूत कर सके हैं?

# जयशंकर प्रसाद

जयशंकर प्रसाद (1889-1937 ई.) का जन्म काशी के प्रसिद्ध 'सुँघनी साहू' परिवार में हुआ। बाल्यकाल में ही पिता के निधन के कारण उन पर व्यवसाय का भार आ पड़ा, अतः उनकी शिक्षा-दीक्षा घर पर ही हुई। प्रसाद ने हिन्दी, उर्दू, संस्कृत तथा अंग्रेजी भाषाओं का घर पर ही अध्ययन किया। संस्कृत वाङ्मय तथा प्राचीन भारतीय संस्कृति के प्रति प्रसाद में असीम अनुराग दिखाई पड़ता है। कविता की ओर उनका झुकाव बचपन से ही था। प्रारंभ में वे ब्रजभाषा में कविताएँ लिखा करते थे।

आधुनिक हिन्दी-कविता की छायावादी काव्यधारा के कवियों में प्रसाद का नाम सर्वोपरि है। छायावादी कविता का वैभव अपनी पूर्णता के साथ प्रसाद की कविताओं में प्राप्त होता है। उनका सौंदर्य बोध बहुत गहन एवं सूक्ष्म है। पुनर्जागरणकालीन रचनाकार होने के कारण प्रसाद में अतीत के प्रति एक प्रकार का मोह और आसक्ति मिलती है। प्रसाद यौवन, प्रेम और लावण्य के कवि हैं। उनके रूप-चित्रण में प्राचीन नगर की-सी सुसंस्कृत अभिरुचि मिलती है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने प्रसाद की 'मधुमयी प्रतिभा' और 'जागरुक भावुकता' की ओर विशेष रूप से संकेत किया है।

'झरना' आदि प्रारंभिक रचनाओं में प्रसाद की काव्य भाषा सरल और सुबोध है। परवर्ती रचनाओं में भाषा तत्सम प्रधान और लाक्षणिक होती गई है। वस्तुतः प्रसाद अभिधा के नहीं, लक्षणा और व्यंजना के कवि हैं।

कामायनी प्रसाद की सर्वश्रेष्ठ रचना है और छायावाद का अप्रतिम महाकाव्य है। उनकी अन्य मुख्य काव्य कृतियाँ हैं—'काननकुसुम', 'झरना', 'आँसू और लहर'। उनके प्रसिद्ध नाटक हैं — 'चंद्रगुप्त और

स्कंदगुप्त' । उनकी ब्रजभाषा में लिखी कविताएँ चित्राधार में संकलित हैं। प्रसाद मूलतः कवि थे, पर नाटक, उपन्यास और कहानी के क्षेत्र में भी उनकी रचनाएँ सुप्रतिष्ठित हैं।

अतीत की सुखद स्मृतियों में खोए रहना छायावादी काव्य की एक विशेषता है। 'वे कुछ दिन' कविता में वर्षाकाल से बिंब चुनकर कवि अपने यौवन के उन दिनों को याद कर रहा है, जो मादक और सरस थे।

'आँसू' शीर्षक के अंतर्गत संकलित पद कवि के इसी नाम के विरह काव्य से लिए गए हैं। इन पदों में विरह-वेदना से व्यथित कवि की व्याकुलता का मर्मस्पर्शी चित्रण है। प्रकृति से लिए गए बिंबों ने कवि की वेदना को अत्यधिक मार्मिक बना दिया है।

'विजयिनी मानवता' कविता 'कामायनी' के श्रद्धा सर्ग से उद्धृत है। चिंतामग्न और निराश हताश मनु का जीवन के आकर्षणों की ओर ध्यान खींचती हुई श्रद्धा फिर से उन्हें उद्योग और कर्म के लिये उत्प्रेरित और उत्साहित कर रही है।

## वे कुछ दिन

वे कुछ दिन कितने सुदंर थे ?
जब सावन-घन-सघन बरसते —
इन आँखों की छाया भर थे !

सुरधनु रंजित नव-जलधर से —
भरे, क्षितिज व्यापी अंबर से,
मिले चूमते जब सरिता के,
हरित कूल युग मधुर अधर थे।

प्राण पपीहा के स्वर वाली—
बरस रही थी जब हरियाली —
रस जलकन मालती-मुकुल से—
जो मदमाते गंध विधुर थे।

चित्र खींचती थी जब चपला,
नील मेघ-पट पर वह विरला,
मेरी जीवन-स्मृति के जिसमें —
खिल उठते थे रूप मधुर थे।

## आँसू

इस करुणा कलित हृदय में।
अब विकल रागिनी बजती

क्यों हाहाकार स्वरों में
वेदना असीम गरजती ?

मानस-सागर के तट पर
क्यों लोल लहर की घातें
कल-कल ध्वनि से हैं कहती
कुछ विस्मृत बीती बातें ?

आती है शून्य क्षितिज से
क्यों लौट प्रतिध्वनि मेरी
टकराती बिलखाती-सी
पगली-सी देती फेरी ?

क्यों व्यथित व्योम-गंगा-सी
छिटका कर दोनों छोरें
चेतना तरंगिनि मेरी
लेती है मृदुल हिलोरें।

बस गयी एक बस्ती है
स्मृतियों की इसी हृदय में
नक्षत्र-लोक फैला है
जैसे इस नील निलय में।

ये सब स्फुलिंग हैं मेरी
इस ज्वालामयी जलन के
कुछ शेष चिह्न है केवल
मेरे उस महा मिलन के।

शीतल ज्वाला जलती है
ईंधन होता दृग-जल का
यह व्यर्थ साँस चल-चलकर

करती है काम अनिल का।
वाडवज्वाला सोती थी
इस प्रणय-सिंधु के तल में
प्यासी मछली-सी आँखें
थीं विकल रूप के जल में

बुलबुले सिंधु के फूटे
नक्षत्र मालिका टूटी
नभ-मुक्त-कुंतला धरणी
दिखलाई देती लूटी।

छिल-छिलकर छाले फोड़े
मल-मलकर मृदुल चरण से
धुल-धुलकर वह रह जाते
आँसू करुणा के कण से।

## विजयिनी मानवता

कहा आगंतुक ने सस्नेह–
''अरे, तुम इतने हुए अधीर !
हार बैठे जीवन का दाँव,
जीतते मरकर जिसको वीर।
तप नहीं केवल जीवन सत्य
करुण यह क्षणिक दीन अवसाद
तरल आकांक्षा से है भरा
सो रहा आशा का आह्लाद।
प्रकृति के यौवन का शृंगार
करेंगे कभी न बासी फूल
मिलेंगे वे जाकर अति शीघ्र
आह उत्सुक है उनकी धूल

पुरातनता का यह निर्मोक
सहन करती न प्रकृति पल एक,
नित्य नूतनता का आनंद
किए है परिवर्तन में टेक।
युगों की चट्टानों पर सृष्टि
डाल पद चिह्न चली गंभीर
देव-गंधर्व, असुर की पंक्ति
अनुसरण करती उसे अधीर
एक तुम, यह विस्तृत भूखंड
प्रकृति-वैभव से भरा अमंद;
कर्म का भोग, भोग का कर्म
यही जड़ का चेतन आनंद।
अकेले तुम कैसे असहाय
यजन कर सकते ? तुच्छ विचार !
तपस्वी ! आकर्षण से हीन
कर सके नहीं आत्म-विस्तार
दब रहे हो अपने ही बोझ
खोजते भी न कहीं अवलंब;
तुम्हारा सहचर बनकर क्या न
उऋण होऊँ मैं बिना विलंब?
समर्पण लो सेवा का सार
सजल संसृति का यह पतवार,
आज से यह जीवन उत्सर्ग
इसी पद-तल में विगत-विकार
दया, माया, ममता लो आज,
मधुरिमा लो,अगाध विश्वास;
हमारा हृदय-रत्न-निधि स्वच्छ
तुम्हारे लिये खुला है पास।
बनो संसृति के मूल रहस्य
तुम्हीं से फैलेगी वह बेल;
विश्व भर सौरभ से भर जाय

सुमन के खेलो सुंदर खेल।
और यह क्या तुम सुनते नहीं
विधाता का मंगल वरदान—
'शक्तिशाली हो, विजयी बनो'
विश्व में गूँज रहा जय गान।
डरो मत अरे अमृत-संतान
अग्रसर है मंगलमय वृद्धि;
पूर्ण आकर्षण जीवन-केंद्र
खिंची आएगी सकल समृद्धि।
देव-असफलताओं का ध्वंस
प्रचुर उपकरण जुटाकर आज।
पड़ा है बन मानव-संपत्ति
पूर्ण हो मन का चेतन राज।
चेतना का सुंदर इतिहास-
अखिल मानव भावों का सत्य
विश्व के हृदय पटल पर दिव्य
अक्षरों से अंकित हो नित्य।
विधाता की कल्याणी सृष्टि
सफल हो इस भूतल पर पूर्ण;
पटें सागर, बिखरें ग्रह-पुंज
और ज्वालामुखियाँ हों चूर्ण।
उन्हें चिनगारी सदृश सदर्प
कुचलती रहे खड़ी सानंद;
आज से मावनता की कीर्ति
अनिल, भू, जल में रहे न बंद।
जलधि के फूटे कितने उत्स
द्वीप, कच्छप डूबें-उतराएँ;
किंतु वह खड़ी रहे दृढ़ मूर्ति
अभ्युदय का कर रही उपाय
विश्व की दुर्बलता बल बने,
पराजय का बढ़ता व्यापार;

हँसाता रहे उसे सविलास
शक्ति का क्रीड़ामय संचार।
शक्ति के विद्युत्कण, जो व्यस्त
विकल बिखरे हैं, हो निरुपाय,
समन्वय उसका करे समस्त
विजयिनी मानवता हो जाए।''

## प्रश्न-अभ्यास

**वे कुछ दिन**

1. वे कौन से ''कुछ दिन'' थे जिनकी स्मृति कवि भुला नही पाया?
2. प्रेमी-प्रेमिका के मिलन को कवि ने किन प्रतीकों के सहारे चित्रित किया है ?
3. मेघों में चमकती हुई बिजली को देखकर कवि के स्मृति-पटल पर कौन से छवि-चित्र अंकित हो जाते थे ?
4. इस कविता में कौन-कौन सी छायावादी विशेषताएँ स्पष्ट रूप से उभरी हैं ?
5. निम्नलिखित पंक्तियों का काव्य-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए :
   (क) जब सावन घन सरस बरसते
   इन आँखों की छाया भर थे।
   (ख) चित्र खीचती थी जब चपला
   नील मेघ-पट पर वह विरला।
6. निम्नलिखित पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकारों को बताइए।
   (क) सुरधनु रंजित नव-जलधर से
   (ख) प्राण पपीहा के स्वरवाली

**आँसू**

1. आँसू कविता के आधार पर विरह-व्याकुल प्रेमी की दशा का वर्णन कीजिए ?
2. कवि अपनी विरह-वेदना का प्रसार किस-किस रूप में देखता है ?
3. प्रकृति के किन-किन रूपों में कवि अपनी वेदना की अभिव्यक्ति पाता है?
4. कवि ने स्मृतियों की बस्ती की तुलना नक्षत्र लोक से क्यों की है ?
5. निम्नलिखित का भाव-सौदर्य स्पष्ट कीजिए :
   (क) ये सब स्फुलिंग हैं मेरी
   उस ज्वालामयी जलन के
   (ख) शीतल ज्वाला जलती है
   ईंधन होता दृग-जल का
   (ग) नभ-मुक्त-कुंतला धरणी
   दिखलाई देती लूटी

6. कवि ने आँसुओं को ''करुणा के कण'' क्यों कहा है ?
7. इस कविता में से श्लेष, उपमा, रूपक और उत्प्रेक्षा अलंकारों के उदाहरण छाँट कर लिखिए।
8. इस काव्यांश के आधार पर जयशंकर प्रसाद की काव्यभाषा की चित्रात्मकता पर टिप्पणी लिखिए।

**विजयिनी मानवता**

1. मानवता को विजयिनी बनाने के लिए मनु को श्रद्धा ने क्या-क्या सुझाव दिए?
2. प्रकृति का सचेतन नियम क्या है ? इसे अपनाने का आग्रह श्रद्धा मनु से क्यों करती है ?
3. ''समर्पण लो सेवा का सार, सजल संसृति का यह पतवार'' कहकर श्रद्धा क्या प्रस्तावित कर रही है और क्यों ?
4. कवि ने मानव की किस पराक्रमी और साहसी मूर्ति की कामना की है ?
5. निम्नलिखित पंक्तियों का काव्य-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए :

   (क) प्रकृति के यौवन का शृंगार
   करेंगे कभी न बासी फूल।

   (ख) कर्म का भोग, भोग का कर्म
   यही जड़ का चेतन आनंद।

   (ग) विश्व भर सौरभ से भरजाए
   सुमन के खेलो सुंदर खेल।

   (घ) पटें सागर, बिखरें ग्रह-पुंज
   और ज्वालामुखियाँ हों चूर्ण

6. श्रद्धा नारीत्व की कौन-सी संपदाएँ देकर मनु के पुरुषत्व को पूर्णता देना चाहती है ?
7. ''दुर्बलता बल बने'' के विरोधाभास को स्पष्ट कीजिए।

# सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' (1899-1961 ई.) का जन्म बंगाल के मेदिनीपुर जिले के महिषादल राज्य में हुआ था। पिता पं. रामसहाय त्रिपाठी महिषादल राज्य में सामान्य कर्मचारी थे। चौदह वर्ष की आयु में उनका विवाह मनोहरा देवी से हुआ, किंतु उनका पारिवारिक जीवन सुखमय नहीं रहा। 1918 ई. में उनकी पत्नी की मृत्यु हो गई और उसके बाद, पिता, चाचा और चचेरे भाई एक-एक कर चल बसे। अंत में प्रिय पुत्री सरोज की मृत्य ने तो उनके हृदय के टुकड़े-टुकड़े कर दिए। इस प्रकार निराला जीवन-भर क्रूर परिस्थितियों से संघर्ष करते रहे।

निराला छायावादी काव्य-युग के प्रमुख स्तंभ माने जाते हैं और उनमें छायावाद की समस्त काव्य-प्रवृत्तियों का विकास देखा-दिखाया जा सकता है, किंतु उनको निराला बनाने वाला है उनका क्रांतिकारी प्रगतिशील, विद्रोही और बेबाक व्यक्तित्व शोषक वर्ग के प्रति उनका विद्रोह और आक्रोश जहां सर्वत्र दिखाई पड़ता है, वहाँ उपेक्षित, वंचित और पीड़ित-शोषित के प्रति उनकी संवेदना और सहानुभूति शत-शत धाराओं में प्रवाहमान हुई है। वे 'जागो फिर एक बार' 'महाराज शिवाजी का पत्र', 'झींगुर डटकर बोला', 'महँगू महँगा रहा' आदि कविताओं में शोषकों के विरुद्ध शोषितों के संघर्ष का आह्वान करते हैं तो 'विधवा भिक्षुक' और 'वह तोड़ती पत्थर' जैसी कविताओं में उनकी करुणा शोषित-पीड़ित वर्ग की वाणी बन गई है।

निराला का यह विद्रोही रूप भाव-विषय-वस्तु के अलावा शिल्प के स्तर पर भी व्यक्त हुआ है। उन्होंने परंपरा से चले आए छंदों के बंधनों को तोड़कर मुक्त छंद की घोषणा की। इस प्रकार निराला ने वीरत्व व्यंजक स्वच्छंदतावादी भाव-बोध को व्यक्त किया है। उन्होंने साहित्य में बंधनों का विरोध किया तो जीवन में सामंती रूढ़ियों और साम्राज्यवादी वृत्तियों का डटकर सामना किया।

निराला की काव्य-भाषा में संधि-समास-युक्त विविध जाति तथा ध्वनि वाले शब्दों का आधिक्य है। उनमें संगीत का स्वर भाषा के प्रवाह को और अधिक गति देता है तथा जागरूक शब्द–विन्यास भाषा में चित्रात्मकता ले आता है। वाक्यों में कसाव, शब्दों में मितव्ययिता और अर्थ–सघनता उनकी काव्य–भाषा की विशेषताएँ हैं।

'अनामिका', 'परिमल', 'गीतिका', 'तुलसीदास', 'कुकुरमुत्ता', 'अणिमा', 'नए पत्ते' 'बेला', 'अर्चना', 'आराधना' तथा 'गीतगंज' उनकी अमर काव्य–कृतियाँ हैं। काव्य के अतिरिक्त गद्य साहित्य को भी संपन्न करने में निराला ने योगदान दिया है। निराला का संपूर्ण साहित्य निराला रचनावली के नाम से आठ भागों में प्रकाशित हो चुका है।

निराला आधुनिक हिंदी के सबसे बड़े क्रांतिकारी और प्रयोगधर्मी कवि हैं।

'स्नेह निर्झर बह गया है' कविता में कवि के जीवन के उस संध्याकाल का चित्रण है, जब उसका जीवन प्रेम, रस, क्रियाशीलता और सौंदर्य से शून्य हो चुका है। पीड़ा इस कविता का मूल स्वर है।

'गहन है यह अंधकारा' में कवि ने स्वार्थ–जनित निराशा व्यक्त करते हुए नव चेतना की आकांक्षा व्यक्त की है।

'संध्या सुंदरी' कविता प्रकृति चित्रण की कविता है। इसमें संध्या का मानवीकरण है और विभिन्न बिंबों के द्वारा कवि ने संध्या को साकार रूप देने का प्रयास किया है।

## स्नेह-निर्झर

स्नेह-निर्झर बह गया है।
रेत ज्यों तन रह गया है।
आम की यह डाल जो सूखी दिखी,
कह रही है -- ''अब यहाँ पिक या शिखी
नहीं आते, पंक्ति मैं वह हूँ लिखी
नहीं जिसका अर्थ--
जीवन दह गया है।''

''दिए हैं मैंने जगत को फूल-फल,
किया है अपनी प्रभा से चकित-चल,
पर अनश्वर था सकल पल्लवित पल--
ठाट जीवन का वही
जो ढह गया है।''

अब नहीं आती पुलिन पर प्रियतमा,
श्याम तृण पर बैठने को, निरुपमा
बह रही है हृदय पर केवल अमा;
मैं अलक्षित हूँ, यही--
कवि कह गया है।

## गहन है यह अंधकारा

गहन है यह अंधकारा,
स्वार्थ के अवगुण्ठनों से,
हुआ है लुण्ठन हमारा।

खड़ी है दीवार जड़ को घेरकर,
बोलते हैं लोग ज्यों मुँह फेरकर,
इस गगन में नहीं दिनकर,
नहीं शशधर, नहीं तारा।

कल्पना का ही अपार समुद्र यह,
गरजता है घेरकर तनु, रुद्र यह,
कुछ नहीं आता समझ में,
कहाँ है श्यामल किनारा

प्रिय, मुझे वह चेतना दो देह की,
याद जिससे रहे वंचित गेह की,
खोजता-फिरता, न पाता हुआ,
मेरा हृदय हारा।

## संध्या सुंदरी

दिवसावसान का समय,
मेघमय आसमान से उतर रही है
वह संध्या-सुंदरी परी-सी
धीरे-धीरे-धीरे।
तिमिरांचल में चंचलता का नहीं कहीं आभास,
मधुर-मधुर हैं दोनों उसके अधर,—
किंतु जरा गंभीर — नहीं है उनमें हास-विलास।
हँसता है तो केवल तारा एक
गुँथा हुआ उन घुँघराले काले-काले बालों से
हृदयराज्य की रानी का वह करता है अभिषेक।

अलसता की-सी लता
किंतु कोमलता की वह कली
सखी नीरवता के कंधे पर डाले बाँह,
छाँह-सी अंबर-पथ से चली।

नहीं बजती उसके हाथों में कोई वीणा,
नहीं होता कोई अनुराग-राग-आलाप
नूपुरों में भी रुनझुन-रुनझुन नहीं,
सिर्फ एक अव्यक्त शब्द-सा 'चुप, चुप, चुप',
है गूँज रहा सब कहीं–

व्योम-मंडल में–जगतीतल में –
सोती शांत सरोवर पर उस अमल कमलिनी-दल में –
सौंदर्य गर्विता सरिता के अतिविस्तृत वक्षःस्थल में--
धीर वीर गंभीर शिखर पर हिमगिरी अटल-अचल में –
उत्ताल-तरंग-घात-प्रलय-घन-गर्जन--जलधि-प्रबल में–

क्षिति में–जल में–नभ में–अनिल-अनल में–
सिर्फ एक अव्यक्त शब्द-सा 'चुप, चुप, चुप',
है गूँज रहा सब कहीं

और क्या है ? कुछ नहीं।
मदिरा की वह नदी बहाती आती,
थके हुए जीवों को वह सस्नेह
प्याला एक पिलाती,

सुलाती उन्हें अंक पर अपने,
दिखलाती फिर विस्मृति के वह अगणित मीठे सपने;
अर्धरात्रि की निश्चलता में हो जाती जब लीन,
कवि का बढ़ जाता अनुराग,
विरहाकुल कमनीय कंठ से
आप निकल पड़ता तब एक विहाग।

## प्रश्न-अभ्यास

**स्नेह निर्झर**

1. कवि का जीवन रेत-सा नीरस क्यों हो गया है?
2. अपने जीवन की नीरसता और व्यर्थता को कवि ने जिन प्रतीकों के माध्यम से व्यक्त किया है उन्हें स्पष्ट कीजिए?
3. किन पंक्तियों में कवि ने अपने जीवन के उस ठाठ की ओर इंगित किया है, जब उसने अपनी काव्य प्रतिभा से जगत को चकित किया था ?
4. प्रेम-भरी संयोग-स्मृति की कसक को कवि ने किन शब्दों में अभिव्यक्त किया है ?
5. भाव-सौदर्य स्पष्ट कीजिए:
   (क) स्नेह निर्झर बह गया है
   रेत ज्यों तन रह गया है।
   (ख) पंक्ति मैं वह हूँ लिखी
   नहीं जिसका अर्थ--
   (ग) पर अनश्वर था सकल पल्लवित पल --
   ठाट जीवन का वही--
   जो ढह गया है

**गहन है यह अंधकारा**

1. कवि ने जीवन को अंधकारा क्यों कहा है ?
2. इस जीवन में कोई भी आकर्षण क्यों नहीं रहा?
3. कवि किन-किन विरोधी स्थितियों से घिरकर अपने आप को असहाय पाता है ?
4. "खड़ी है दीवार जड़ को घेरकर" कथन में निहित व्यंजना को स्पष्ट कीजिए।
5. "श्यामल किनारा" से कवि का क्या आशय है ? वह कवि को क्यों नहीं दिखाई पड़ रहा है?
6. "प्रिय मुझे वह चेतना दो देह की,
   याद जिससे रहे वंचित गेह की"
   उपर्युक्त पंक्तियों में 'वंचित गेह' से कवि का क्या तात्पर्य है।

## संध्या सुंदरी

1. 'संध्या-सुंदरी' के जैसे रूप सौंदर्य का वर्णन कवि ने अनेक उपमानों और प्रतीकों के सहारे किया है, उसे अपने शब्दों में व्यक्त कीजिए।
2. संध्या की नीरवता सर्वत्र व्याप्त थी--यह भाव कवि ने किस कौशल से अभिव्यक्त किया है?
3. 'हृदयराज्य की रानी का वह करता है अभिषेक' के आधार पर बताइए :
   (क) 'हृदय राज्य की रानी' कौन है ?
   (ख) उसका अभिषेक कौन कर रहा है ?
   (ग) वह अभिषेक कैसे कर रहा है ?
4. थके हुए प्राणियों के प्रति संध्या का व्यवहार कैसा है ?
5. अर्द्धरात्रि की निश्चलता में कवि का "अनुराग" बढ़ जाता है, किन्तु उसके कंठ से "विहाग" के स्वर फूटते हैं, क्यों ?
6. छायावादी कविता की कुछ विशेषताएँ नीचे दी जा रही हैं। प्रत्येक का कम से कम एक उदाहरण प्रस्तुत कविता से दीजिए :
   (क) लाक्षणिकता
   (ख) अप्रस्तुत विधान
   (ग) प्रकृति का मानवीकरण
   (घ) प्रकृति के प्रति आत्मीयता
   (ङ) सौंदर्यवादी दृष्टिकोण
   (च) चित्रमय बिम्ब विधान
7. निम्नांकित काव्य प्रयोगों का सौंदर्य स्पष्ट कीजिए:
   (क) संध्या सुंदरी परी-सी
   (ख) सौदर्य गर्विता सरिता
   (ग) उत्ताल-तरंगाघात-प्रलय- घन-गर्जन-जलधि-प्रबल में--
   (घ) मदिरा की वह नदी
   (ङ) विस्मृति के वह अगणित मीठे सपने
8. 'संध्या-सुंदरी' छंद मुक्त एवं भिन्न तुकांत रचना है, पर कवि ने भावों के अनुसार छंद और लय ~~का सफल प्रयोग किया है। इस कथन की सार्थकता~~ सोदाहरण सिद्ध कीजिए।

# सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'

सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' (1911-1987 ई.) का जन्म भगवान बुद्ध की निर्वाणभूमि कुशीनगर कसया (जिला देवरिया) में हुआ था। उनका बचपन लखनऊ, श्रीनगर और जम्मू में बीता। प्रारंभ में वे विज्ञान के विद्यार्थी थे, किंतु बाद में साहित्य में रुचि होने के कारण अंग्रेजी विषय में एम.ए. की पढ़ाई करते समय क्रांतिकारी आंदोलन के सिलसिले में फरार हुए और 1930 ई. के अंत में पकड़े गए। वे चार वर्ष जेल में और दो वर्ष नजरबंद रहे। उन्होंने अपने जीवन में अनेक नौकरियाँ कीं और छोड़ दीं। अनेक यात्राएँ कीं – देश में भी और विदेश में भी। उन्होंने 'सैनिक', 'विशाल भारत', 'प्रतीक', 'दिनमान', 'नवभारत टाइम्स' एवं 'नया प्रतीक' आदि का संपादन किया।

'अज्ञेय' की प्रारंभिक शिक्षा संस्कृत और अंग्रेजी में हुई, इसलिए 'अज्ञेय' संस्कृतनिष्ठ परंपरा में पले अंग्रेजी संस्कारों के व्यक्ति रहे। उनकी काव्य वस्तु से ही नहीं बल्कि उनके काव्य-शिल्प से भी सुरुचि और शालीनता प्रकट होती है। उनका काव्य और उनका व्यक्तित्व बहुत ही व्यवस्थित रहा। वे हिन्दी के प्रबुद्ध कवि थे।

'अज्ञेय' हिन्दी में 'प्रयोगवाद' और 'नयी कविता' के प्रवर्तक माने जाते हैं। उनकी प्रारंभिक रचनाओं में वैयक्तिकता के स्वर की प्रधानता है और उनमें छायावादी आवेग की झलक भी मिलती है, किंतु धीरे-धीरे कवि वैयक्तिकता के घेरे को तोड़ता चलता है और गैर-रोमांटिक भाव-बोध तथा निर्वैयक्तिकता को अपनी कविता का आदर्श बनाता है। 'अज्ञेय' जीवन के विविध अनुभवों के धनी हैं, अतः उनकी रचनाओं में लौकिक प्रेम की अभिव्यक्ति से लेकर प्रकृति के विविध रूपों के चित्रण के साथ बौद्ध दर्शन के महाशून्यवाद तक की अभिव्यक्ति हुई है। उन्होंने शब्दों को लेकर सटीक अर्थ भरने का प्रयास किया है। निष्कर्षतः 'अज्ञेय'

उन साहित्य निर्माताओं में से हैं। जिन्होंने आधुनिक हिंदी साहित्य को एक नई दिशा दी, एक नया मान दिया। उन्हें उनकी काव्य कृति 'कितनी नावों में कितनी बार' पर सन् 1978 के ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

उनकी मुख्य कृतियाँ है – भग्नदूत (1933), चिंता (1942), इत्यलम् (1946), हरी घास पर क्षण भर (1949), इंद्रधनु रौंदे हुए ये (1957), अरी ओ करुणा प्रभामय (1957), आँगन के पार द्वार (1961), सुनहले शैवाल (1965), कितनी नावों में कितनी बार (1967), क्योंकि मैं उसे जानता हूँ (1969), सागर मुद्रा (1970), पहले मैं सन्नाटा बुनता हूँ (1973), महावृक्ष के नीचे (1977), नदी की बॉक पर छाया (1982)। सदानीरा दो-भाग 'अज्ञेय' की संपूर्ण कविताओं का संकलन है। 'अज्ञेय' ने तार सप्तक (1943), दूसरा सप्तक (1952), तीसरा सप्तक (1959) और चौथा सप्तक (1979) का भी संपादन किया। इनके अलावा उन्होंने कई कहानी-संग्रह, उपन्यास-यात्रा, साहित्य, ललित निबंध और आलोचनाएँ भी लिखी हैं।

'कितनी नावों में कितनी बार' कविता की रचना 'अज्ञेय' ने 30 मई 1966 को युगोस्लाविया के ल्युब्याना नगर में की थी। इस कविता में कवि ने सत्य की खोज में भटक जाने की बातों की ओर संकेत किया है। उसका कथन है कि मानव मात्र सत्य को पहचानने में कहीं-न-कहीं भूल करता है और चकाचौंध में भटक जाता है। कविता में कवि विदेशी चकाचौंध और बेगानेपन की तुलना में अपने देश की शांति और अपनेपन को बेहतर बता रहा है। अपने अनुभव से कवि ने जाना है कि अपने देश जैसा सत्य और प्रकाश अन्यत्र दुर्लभ है। कवि की दृष्टि में भारतीयता और भारतीय मूल्य ही सर्वश्रेष्ठ है।

'शब्द' कविता में साहित्य और भाव संपदा ं विभिन्न व्यक्तियों द्वारा विविध प्रकार से अभिव्यक्त किए जाने वाले प्रये ों का उल्लेख है। कवि कहना चाहता है कि व्यापार और चमत्कार से हटकर भाव-प्रवण व्यक्ति संतुष्ट और उदार होता है।

'नदी के द्वीप' एक प्रतीकात्मक कविता है, जिसमें व्यक्ति समाज और परंपरा के पारस्परिक संबंधों को एक नवीन दृष्टि से देखा गया है। यहाँ द्वीप व्यक्ति का, नदी परंपरा काल का और भूखंड समाज का प्रतीक है।

समाज और व्यक्ति को मिलाने वाली परंपरा ही है। जिस प्रकार द्वीप भू का एक खंड है, किंतु नदी के कारण उसका अलग अस्तित्व है उसी प्रकार व्यक्ति भी समाज का अंग है किंतु काल परंपरा के कारण उसका एक स्वतंत्र व्यक्तित्व भी बन जाता है। कवि का संदेश है कि समाज में व्यक्ति को संस्कार ही प्राप्त करना है, उसमें अपने आपको मिटा नहीं देना है, नई-नई संभावनाओं को जन्म देना है।

## कितनी नावों में कितनी बार

कितनी दूरियों से कितनी बार
कितनी डगमग नावों में बैठ कर
मैं तुम्हारी ओर आया हूँ
ओ मेरी छोटी-सी ज्योति!
कभी कुहासे में तुम्हें न देखता भी
पर कुहासे की ही छोटी-सी रुपहली झलमल में
पहचानता हुआ तुम्हारा ही प्रभा- मंडल।
कितनी बार मैं,
धीर, आश्वस्त अक्लांत—
ओ मेरे अनबुझे सत्य! कितनी बार ...

और कितनी बार कितने जगमग जहाज
मुझे खींच कर ले गए हैं कितनी दूर
किन पराए देशों की बेदर्द हवाओं में
जहाँ नंगे अँधेरों को
और भी उघाड़ता रहता है
एक नंगा, तीखा, निर्मम प्रकाश—
जिसमें कोई प्रभा-मंडल नहीं बनते
केवल चौंधियाते हैं तथ्य, तथ्य-तथ्य —
कितनी बार मुझे
खिन्न, विकल, संत्रस्त-
कितनी बार!

— कितनी नावों में कितनी बार

## शब्द

किसी को
शब्द हैं कंकड़:
कूट लो, पीस लो,
छान लो, डिबियों में डाल दो
थोड़ी-सी सुगंध दे के
कभी किसी मेले के रेले में
कुंकुम के नाम पर निकाल दो।
किसी को
शब्द हैं सीपियाँ —
लाखों का उलट-फेर
कभी एक मोती मिल जाएगा :
दूसरे सराहेंगे—
डाह भी करेंगे कोई
पारखी स्वयं को मान पाएगा।
किसी को शब्द हैं नैवेद्य।
थोड़ा-सा प्रसादवत्,
मुदित, विभोर वह पाता है
उसी में कृतार्थ, धन्य,
सभी को लुटाता है
अपना हृदय
वह प्रेममय।

## नदी के द्वीप

हम नदी के द्वीप हैं।
हम नहीं कहते कि हमको छोड़ कर स्रोतस्विनी बह जाए।
वह हमें आकार देती है।

हमारे कोण, गलियाँ, अंतरीप, उभार, सैकत-कूल
सब गोलाइयाँ उसकी गढ़ी हैं

माँ है वह ! है, इसी से हम बने हैं।
किंतु हम हैं द्वीप। हम धारा नहीं हैं।
स्थिर समर्पण है हमारा। हम सदा से द्वीप हैं स्रोतस्विनी के
किंतु हम बहते नहीं हैं। क्योंकि बहना रेत होना है।
हम बहेंगे तो रहेंगे ही नहीं।
पैर उखड़ेगें। प्लवन होगा। ढहेंगे। सहेंगे। बह जाएँगे।

और फिर हम चूर्ण होकर भी कभी क्या धार बन सकते ?
रेत बनकर हम सलिल को तनिक गँदला ही करेंगे।
अनुपयोगी ही बनाएँगे।

द्वीप हैं हम ! यह नहीं है शाप। यह अपनी नियति है।
हम नदी के पुत्र हैं। बैठे नदी की क्रोड में।
वह वृहत भूखंड से हमको मिलाती है।
और वह भूखण्ड अपना पितर है।
नदी तुम बहती चलो।
भूखंड से जो दाय हमको मिला है, मिलता रहा है,
माँजती, संस्कार देती चलो। यदि ऐसा कभी हो–

तुम्हारे आह्लाद से या दूसरों के,
किसी स्वैराचार से, अतिचार से,
तुम बढ़ो, प्लावन तुम्हारा घरघराता उठे–
यह स्रोतस्विनी ही कर्मनाशा कीर्तिनाशा घोर काल,
प्रवाहिनी बन जाए–
तो हमें स्वीकार है वह भी। उसी में रेत होकर –
फिर छनेंगे हम। जमेंगे हम। कहीं फिर पैर टेकेंगे।
कहीं फिर भी खड़ा होगा नए व्यक्तित्व का आंकार
मातः, उसे फिर संस्कार तुम देना।

– बावरा अहेरी से

## प्रश्न-अभ्यास

**कितनी नावों में कितनी बार**

1. अनेकानेक यात्राओं ने कवि को किस 'अनबुझे सत्य' से साक्षात्कार कराया ?
2. निम्नलिखित का आशय स्पष्ट करो :
   (क) ओ मेरी छोटी-सी ज्योति
   (ख) बेदर्द हवाएँ
   (ग) प्रभा-मंडल
   (घ) निर्मम प्रकाश
3. निम्नलिखित पंक्तियों मे काव्य-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए :
   (क) कभी कुहासे में तुम्हें न देखता भी
   पर कुहासे की ही छोटी-सी रुपहली झलमल में
   पहचानता हुआ तुम्हारा ही प्रभा-मंडल।
   (ख) जहाँ नंगे अँधेरों को
   और भी उघाड़ता रहता है
   एक नंगा, तीखा, निर्मम प्रकाश—

**शब्द**

1. शब्द के माध्यम से अभिव्यक्ति की कौन-कौन सी भंगिमाएँ उजागर हुई हैं ?
2. 'कंकड़ों' के रूप में शब्दों का प्रयोग किस प्रकार होता है ?
3. ''कभी एक मोती मिल जाएगा'' पंक्ति के आधार पर बताइए--
   (क) मोती का क्या अभिप्राय है?
   (ख) मोती के मिल जाने पर कुछ लोग सराहना और कुछ लोग डाह क्यों करते हैं?
4. कुछ लोग प्रसादवत प्राप्त थोड़े से शब्दों का क्या उपयोग करते हैं?
5. कवि ने शब्दों को किन-किन रूपो में देखा है ? इनमें से कौन-सा रूप आपको सर्वाधिक आकर्षित्त करता है ?
6. 'अज्ञेय' प्रतीकों के प्रयोग में बेजोड़ हैं। सोदाहरण सिद्ध कीजिए ?

**नदी के द्वीप**

1. नदी और द्वीप के प्रतीकों को स्पष्ट करते हुए उनका पारस्परिक संबंध बताइए।
2. द्वीपों का नदी की माँ और भूखंड को पिता कहना कहाँ तक उपयुक्त है ?
3. ''रेत बन कर हम सलिल को तनिक गँदला ही करेंगे''? द्वीप के उपर्युक्त कथन का औचित्य बताइए।
4. किन नवीन संभावनाओं की आशा में द्वीपों को बाढ़ में बहना भी स्वीकार्य है ?
5. ''बहना रेत होना है'' कैसे ?
6. भाव स्पष्ट कीजिए—
   (क) हमारे कोण,गलियाँ, अतंरीप उभार
   सैकत कूल सब गोलाइयाँ उसकी गढ़ी हैं।
   (ख) यह नहीं है शाप, यह अपनी नियति है।
   (ग) स्थिर समर्पण है हमारा।

# गजानन माधव 'मुक्तिबोध'

गजानन माधव 'मुक्तिबोध' (1917-1964 ई.) का जन्म ग्वालियर के श्योपुर कस्बे में हुआ था। जहाँ सौ साल पहले उनके पूर्वज आ बसे थे। पिता पुलिस में सब इंसपेक्टर थे, जिनकी बार-बार बदली होने के कारण 'मुक्तिबोध' की पढ़ाई का क्रम टूटता-जुड़ता रहा। सन् 1954 में उन्होंने नागपुर विश्वविद्यालय से हिन्दी में एम. ए. करने के बाद राजनाद गाँव म.प्र. के डिग्री कालेज में अध्यापन कार्य आरंभ किया और जीवन पर्यन्त वहीं रहे। वे शिक्षक, पत्रकार तथा पुनः शिक्षक हुए तथा सरकारी और गैर सरकारी नौकरियाँ पकड़ते-छोड़ते रहे।

'मुक्तिबोध' का जीवन संघर्षों और विरोधों के बीच बीता। उन्होंने विविध दार्शनिक विचारधाराओं का गंभीर अध्ययन किया। उनकी प्रतिभा का सर्वप्रथम परिचय उस समय हुआ जब 'अज्ञेय' द्वारा सपांदित तार सप्तक (1943) में उनकी रचनाएँ प्रकाशित हुईं।

'मुक्तिबोध' की रचनाओं में जटिल बिंब और प्रतीक, विलक्षण बौद्धिकता, गहरी अंतर्दृष्टि और व्यापक संवदेना रहती है। उनकी अनेक लंबी कविताओं में विराट रचनाधर्मिता पाई जाती है तथा उनका कवि-व्यक्तित्व, वैचारिक चिंतन, विस्तृत ज्ञान एवं संवेदना से भरा है। उनकी कविता आधुनिक जागरूक व्यक्तित्व के आत्मसंघर्ष की कविता है तथा उसमें संपूर्ण परिवेश के बीच अपने आपको खोजने-पाने के साथ-साथ अपने आपको बदलने की प्रक्रिया का भी चित्रण मिलता है। उन्होंने अपनी संवेदना और ज्ञान के अनुसार एक विशिष्ट काव्य शिल्प का निर्माण किया है। फैंटेसी का सार्थक उपयोग उनकी कविता में देखने को मिलता है। 'मुक्तिबोध' जीवन के वैविध्यपूर्ण विकास-क्रम को देखने के लिए काव्य के भिन्न-भिन्न रूपों को — यहाँ तक कि नाट्य तत्व को भी कविता में स्थान देने के हिमायती हैं।

'मुक्तिबोध' की कतिवाओं के संग्रह 'चाँद का मुँह टेढ़ा है' और 'भूरी-भूरी खाक-धूल' नाम से प्रकाशित हुए है। इसके अतिरिक्त दो कहानी संग्रह 'विपात्र' नामक एक उपन्यास, कामायनी एक पुनर्विचार तथा 'एक साहित्यिक की डायरी' आदि उनकी अन्य महत्त्वपूर्ण कृतियाँ है। 'मुक्तिबोध' का संपूर्ण साहित्य 'मुक्तिबोध रचनावली' नाम से छह खंडों में प्रकाशित है।

'सहर्ष स्वीकारा है' 'मुक्तिबोध' की एक सशक्त कविता है, जिसमें कवि ने अपने जीवन के समस्त खट्टे-मीठे अनुभवों, कोमल-तीखी अनुभूतियों और दुख-सुख की स्थितियों को इसलिए सहर्ष स्वीकारा है, क्योंकि वह अपने किसी भी क्षण को अपने प्रिय से न केवल अत्यंत जुड़ा हुआ अनुभव करता है, अपितु हर स्थिति-परिस्थिति को उसी की देन मानता है।

'ओ मेरे मन' कविता में कवि ने अपने मन के माध्यम से समाज में व्याप्त ढोंग, मिथ्या आदर्श तथा कथनी और करनी के अंतर पर अपनी खीज व्यक्त की है। यहाँ मूल्यहीन और स्वार्थ में अंधे व्यक्ति को कवि प्रताड़ित कर रहा है।

## ओ मेरे मन

ओ मेरे आदर्शवादी मन,
ओ मेरे सिद्धांतवादी मन,
अब तक क्या किया ?
जीवन क्या जिया !!

उदरम्भरि बन अनात्म बन गए,
भूतों की शादी में कनात-से तन गए,
किसी व्यभिचारी के बन गए बिस्तर,

दुखों के दागों को तमगों-सा पहना,
अपने ही खयालों में दिन-रात रहना,
असंग बुद्धि व अकेले में सहना,
ज़िंदगी निष्क्रिय बन गयी तलघर,

अब तक क्या किया,
जीवन क्या जिया !!

बताओ तो किस-किस के लिये तुम दौड़ गए,
करुणा के दृश्यों से हाय ! मुँह मोड़ गए,
बन गए पत्थर,
बहुत-बहुत ज्यादा लिया,
दिया बहुत-बहुत कम
मर गया देश, अरे, जीवित रह गये तुम !!

लो-हित-पिता को घर से निकाल दिया,
जन-मन-करुणा-सी माँ को हंकाल दिया,
स्वार्थों के टेरियार कुत्तों को पाल लिया,
भावना के कर्तव्य त्याग दिए,
हृदय के मन्तव्य-मार डाले !
बुद्धि का भाल ही फोड़ दिया,
तर्कों के हाथ उखाड़ दिए,
जम गए, जाम हुए, फँस गए,
अपने ही कीचड़ में धँस गए !!
विवेक बघार डाला स्वार्थों के तेल में
आदर्श खा गए।

## सहर्ष स्वीकारा है

जिंदगी में जो कुछ है, जो भी है
सहर्ष स्वीकारा है,
इसलिए कि जो कुछ भी मेरा है
वह तुम्हें प्यारा है।

गरवीली गरीबी यह, ये गभीर अनुभव सब
यह विचार-वैभव सब
दृढ़ता यह, भीतर की सरिता यह अभिनय सब
मौलिक है, मौलिक है,
इसलिए कि पल-पल में
जो कुछ भी जाग्रत है, अपलक है—
संवेदन तुम्हारा है !!

जाने क्या रिश्ता है, जाने क्या नाता है
जितना भी उँड़ेलता हूँ, भर-भर फिर आता है
दिल में क्या झरना है ?

मीठे पानी का सोता है
भीतर वह, ऊपर तुम
मुसकाता चाँद ज्यों धरती पर रात-भर.
मुझ पर त्यों तुम्हारा ही खिलता वह चेहरा है।
सचमुच मुझे दण्ड दो कि भूलूँ मैं
भूलँ मैं

तुम्हें भूल जाने की
दक्षिणी ध्रुवी अंधकार-अमावस्या
शरीर पर, चेहरे पर, अंतर में पालू मैं
झेलूँ मैं, उसी में नहा लूँ मैं
इसलिए कि तुमसे ही परिवेष्टित आच्छादित
रहने का रमणीय यह उजेला अब
सहा नहीं जाता है।
नहीं सहा जाता है।
ममता के बादल की मँडराती कोमलता-
भीतर पिराती है
कमजोर और अक्षम अब हो गयी है आत्मा यह
छटपटाती छाती को भवितव्यता डराती है
बहलाती सहलाती आत्मीयता बरदाश्त नहीं होती है !!

सचमुच मुझे दण्ड दो कि हो जाऊँ
पाताली अँधेरे की गुहाओं में, विवरों में
धुएँ के बादलों में
बिल्कुल मैं लापता !!
लापता कि वहाँ भी तो तुम्हारा ही सहारा है !!
इसलिए कि जो कुछ भी मेरा है
या मेरा जो होता-सा लगता है होता-सा संभव है
सभी वह तुम्हारे ही कारण के कार्यों का घेरा है, कार्यों का वैभव है
अब तक तो जिंदगी में जो कुछ था, जो कुछ है

सहर्ष स्वीकारा है
इसलिए कि जो कुछ भी मेरा है
वह तुम्हें प्यारा है।

## प्रश्न-अभ्यास

**ओ मेरे मन !**

1. अपने मन को आदर्शवादी और सिद्धांतवादी कहने के पीछे कवि का क्या व्यंग्य है। स्पष्ट कीजिए।
2. 'अब तक क्या किया, जीवन क्या जिया', में निहित क्षोभ व झुझँलाहट का कारण बताइए।
3. इस कविता में आत्मकेंद्रित एवं स्वार्थ पंकिल जीवन के प्रति खीज और झुझँलाहट का कारण बताइए।
4. प्रतीक स्पष्ट कीजिए–
   भूतों की शादी, कनात, बिस्तर, टेरियार कुत्ते
5. कविता की उन पंक्तियों को उद्धृत कीजिए, जिनमें गर्हित स्वार्थ के लिए साथ ही राष्ट्रीय हितों को अनदेखा करने के लिये ग्लानि प्रकट की गई है।
6. भाव स्पष्ट कीजिए :
   (क) दुखों के दागों को तमगों-सा पहना।
   (ख) जिंदगी निष्क्रिय बन गई तलघर।
   (ग) विवेक को बघार डाला स्वार्थों के तेल में।

**सहर्ष स्वीकारा है**

1. वह क्या-क्या है, जिसे कवि ने सहर्ष स्वीकारा है?
2. कवि के पास जो कुछ भी अच्छा-बुरा है वह विशिष्ट और मौलिक कैसे और क्यों है?
3. कवि को अपने प्रिय से संवेदनाओं के धरातल पर क्या कुछ मिला ?
4. एक घोर अंधकारमयी विस्मृति में खो जाने का दण्ड कवि क्यों पाना चाहता है ?
5. कवि के लिए सुखद मधुर स्थिति भी असह्य क्यों बन गई है ?
6. पातली अँधेरे में तथा गुहाओं और धुएँ के बादलों में कवि बिल्कुल लापता हो जाने से भी संतोष का अनुभव क्यों करता है?

7. निम्नलिखित का उत्तर एक वाक्य में दीजिए –
   (क) कवि के हृदय में क्या वस्तु है, जो उसे पिराती है ?
   (ख) क्या चीज़ कवि को डराती है ?
   (ग) कवि क्या बरदाश्त नहीं कर पाता ?
8. भाव स्पष्ट कीजिए–
   (क) गरवीली गरीबी।
   (ख) भीतर की सरिता।
   (ग) मीठे पानी का सोता।
   (घ) बहलाती सहलाती आत्मीयता।

# नागार्जुन

नागार्जुन का जन्म दरभंगा (बिहार) के तरौनी गाँव में हुआ। उनका पूरा नाम वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री' है। उनकी प्रारंभिक शिक्षा स्थानीय संस्कृत पाठशाला में हुई। 1936 ई. में वे श्रीलंका गए और वहाँ उन्होंने बौद्ध धर्म की शिक्षा ली। 1938 ई. में वे स्वदेश लौट आए।

नागार्जुन ने संपूर्ण भारत का कई बार भ्रमण किया है। उनके व्यक्तित्व में घुमक्कड़ी और अक्खड़पन स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। नागार्जुन ने मैथिली और हिन्दी दोनों भाषाओं में रचनाएँ की। वे अपनी मातृभाषा मैथिली में 'यात्री' नाम से लिखते हैं। बंगला और संस्कृत में भी उन्होंने कविताएँ लिखी हैं। उन्होंने 1935 ई. में दीपक (हिन्दी मासिक) और 1942-43 में विश्वबंधु (साप्ताहिक) का संपादन किया। नागार्जुन राजनीतिक गतिविधियों से भी जुड़े रहे और इस सिलसिले में उन्हें कई बार जेल यात्रा भी करनी पड़ी। साहित्य सेवा के लिए उन्हें कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है।

नागार्जुन साहित्य और राजनीति में समान रूप से रुचि रखाने वाले प्रगतिशील साहित्यकार हैं। वे धरती, जनता और श्रम के गीत गाने वाले संवेदनशील कवि हैं। कबीर की-सी सहजता उनके काव्य की विशेषता है। उनकी भाषा में ऊबड़-खाबड़पन और चट्टान की-सी मजबूती है। सामयिंक बोध उनकी कविता का प्रधान स्वर है। उनकी रचनाओं में तीक्ष्ण व्यंग्य पाया जाता है। डा. रामविलास शर्मा ने नागार्जुन के विषय में लिखा है : 'भारतेन्दु और बालमुकुंद गुप्त ने हमारे साहित्य में जो व्यंग्य और जिंदादिली पैदा की, नागार्जुन उसके समर्थ प्रतिनिधि हैं।' इसका कारण उनका जनता से जीवन्त सपंर्क है। उन्होंने कई आंदोलन धर्मी कविताएँ भी लिखी हैं जिन्हें ठीक अर्थों में पोस्टर कविता कहा जाता है।

नागार्जुन की मुख्य काव्य कृतियाँ हैं —युगधारा, प्यासी पथराई आँखें, सतरंगे पंखों वाली, तालाब की मछलियाँ, हज़ार-हज़ार बाँहों वाली, तुमने कहा था, पुरानी जूतियों का कोरस, आखिर ऐसा क्या कह दिया। मैंने, रत्नगर्भा, ऐसे भी हम क्या ऐसे भी तुम क्या, भस्मांकुर (खंड काव्य)।

'यह कैसे होगा' कविता में कवि ने सृजन, निर्माण, अनुशासन और निस्वार्थ भावों से भरे जगत में इन भावों के विरुद्ध जीवन की संभावना पर आश्चर्य व्यक्त किया है।

'बहुत दिनों के बाद' कविता ग्राम्य जीवन के रम्य वातावरण से अभिभूत कवि के मन का गायन है। बहुत समय तक वंचित रहने के बाद व्यक्ति द्वारा पुनः ग्राम्य जीवन का आनंद इस कविता की शब्द योजना और संगीतात्मकता दोनों से प्रस्फुटित हो रहा है।

## यह कैसे होगा ?

यह कैसे होगा ?
यह क्यों कर होगा ?

नई-नई सृष्टि रचने को तत्पर
कोटि-कोटि कर-चरण
देते रहें अहरह स्निग्ध इंगित
और मैं अलस-अकर्मा
पड़ा रहूँ चुपचाप !
यह कैसे होगा ?
यह क्यों कर होगा ?

अधिकाधिक योग-क्षेम
अधिकाधिक शुभ-लाभ
अधिकाधिक चेतना
कर लूँ संचित लघुतम परिधि में !
असीम रहे व्यक्तिगत हर्ष-उत्कर्ष !
अकेले ही सकुशल जी लूँ सौ वर्ष !
यह कैसे होगा ?
यह क्यों कर होगा ?

यथासमय मुकुलित हों
यथासमय पुष्पित हों
यथासमय फल दें
आम और जामुन, लीची और कटहल !
तो फिर मैं ही बाँझ रहूँ !

मैं ही न दे पाऊँ —
परिणत प्रज्ञा का अपना फल !
यह कैसे होगा ?
यह क्यों कर होगा ?

सलिल को सुधा बनाएँ तटबंध
धरा को मुदित करें नियंत्रित नदियाँ
तो फिर मैं ही रहूँ निर्बंध!
मैं ही रहूँ अनियंत्रित !
यह कैसे होगा ?
यह क्योंकर होगा?

भौतिक भोगमात्र सुलभ हों भूरि-भूरि,
विवेक हो कुंठित !
तन हो कनकाभ, मन हो तिमिरावृत !
कमलपत्री नेत्र हों बाहर-बाहर,
भीतर की आँखें निपट-निमीलित !
यह कैसे होगा ?
यह क्योंकर होगा ?

## बहुत दिनों के बाद

बहुत दिनों के बाद
अब की मैंने जी भर देखी
पकी-सुनहली फसलों की मुसकान
— बहुत दिनों के बाद

बहुत दिनों के बाद
अब की मैं जी भर सुन पाया
धान कूटती किशोरियों की कोकिल कण्ठी तान
— बहुत दिनों के बाद

बहुत दिनों के बाद
अब की मैंने जी भर सूँघे
मौलसिरी के ढेर-ढेर से ताजे-टटके फूल
— बहुत दिनों के बाद

बहुत दिनों के बाद
अब की मैं जी भर छू पाया
अपनी गँवई पगडण्डी की चंदनवर्णी धूल
— बहुत दिनों के बाद

बहुत दिनों के बाद
अब की मैंने जी भर तालमखाना खाया
गन्ने चूसे जी भर
— बहुत दिनों के बाद

बहुत दिनों के बाद
अब की मैंने जी भर भोगे
गंध-रूप-रस-शब्द-स्पर्श सब साथ-साथ इस भू पर
— बहुत दिनों के बाद

# प्रश्न-अभ्यास

**यह कैसे होगा**

1. कवि बार-बार क्यों दोहरा रहा है — "यह कैसे होगा ? यह क्यों कर होगा?"
2. विविध कर्म-क्षेत्रों में निर्माण और व्यवस्था तथा दान और विसर्जन की कौन-कौन सी धाराएँ अबाध प्रवाहित हो रही है जो कवि के मन प्राणों को रचनात्मक उत्तेजना दे रही हैं?
3. उन पंक्तियों को रेखाँकित कीजिए जिनमें कवि ने व्यक्ति-केंद्रित स्वार्थों और सुविधाओं के प्रति वितृष्णा प्रकट की है ?
4. भाव स्पष्ट कीजिए :
   (क) अधिकाधिक योग-क्षेम
   अधिकाधिक शुभ-लाभ
   अधिकाधिक चेतना
   कर लूँ संचित लघुतम परिधि में।
   (ख) तन हो कनकाभ, मन हो तिमिरावृत
   कमलपत्री नेत्र हों बाहर-बाहर,
   भीतर की आँखें निपट-निमीलित !
   यह कैसे होगा ?
5. कवि को निम्नलिखित स्थितियाँ क्यों स्वीकार्य नहीं हैं?
   (क) आलसी और अकर्मण्य बनना
   (ख) प्रतिभा को लाभ न दे पाना
   (ग) निर्बंध और अनियंत्रित रहना

**बहुत दिनों के बाद**

1. इस कविता में "बहुत दिनों के बाद" पंक्ति की आवृत्ति की सार्थकता स्पष्ट कीजिए।

2. इस कविता को पढ़कर बहुत दिनों बाद होनेवाली कवि की परितृप्ति पर टिप्पणी लिखिए।
3. पाँचों ज्ञानेंद्रियों के अनुभवों – रूप, रस, गंध, शब्द और स्पर्श को कवि ने किस-किस रूप में भोगा है ?

# सर्वेश्वर दयाल सक्सेना

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना का जन्म (1927-1984 ई.) बस्ती (उ.प्र.) में हुआ। उन्होंने ऐंग्लो संस्कृत उच्च विद्यालय, बस्ती से हाई स्कूल परीक्षा पास कर क्वींस कालेज, वाराणसी में प्रवेश लिया। उन्होंने एम. ए. की परीक्षा प्रयाग विश्वविद्यालय से उत्तीर्ण की। अध्यापन करने और आकाशवाणी में सहायक प्रोड्यूसर रहने के बाद उन्होंने दिनमान के प्रमुख उप-संपादक के पद पर कार्य किया फिर बच्चों की मासिक पत्रिका 'पराग' का संपादन किया।

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। उनकी सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि उन्होंने बच्चों से लेकर प्रबुद्ध जनों तक के लिए साहित्य रचना की।

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना 'तीसरा सप्तक' के कवि हैं। छायावाद के बाद नयी कविता की पहचान कराने वाले कवियों में उनका विशेष योगदान है। उनकी कविताएँ उस नए मोड़ की सूचक हैं, जहाँ से नयी कविता में नवीन दिशाओं और नए क्षितिजों के संधान की प्रक्रिया प्रारंभ होती है। सुमित्रानंदन पंत ने उनकी कलादृष्टि और मूर्ति विधायिनी क्षमता की सराहना करते हुए उन्हें जन्मजात, अकृत्रिम सहज-प्रयत्न कवि और साथ-साथ नए कवियों में कलाबोध का पारखी कवि कहा है। सर्वेश्वर दयाल सक्सेना की कविता में यदि रोमानियत है, तो समसामयिकता भी है। यदि वे समष्टि चेतना के प्रति अत्यधिक सजग हैं, तो दूसरी ओर व्यष्टि चेतना के प्रति भी। उन्होंने समाज में फैली भुखमरी भी देखी है और शोषण से पीड़ित मानव भी।

उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं – काठ की घंटियाँ, बाँस का पुल, एक सूनी नाव, गर्म हवाएँ, कुआनो नदी, जंगल का दर्द, खूँटियों पर टँगे लोग

आदि। इनके अतिरिक्त उन्होंने उपन्यास, नाटक और बाल-साहित्य की भी रचना की है।

'लीक पर चलें' कविता में कवि लीक पर चलने का विरोध करते हुए अपने बनाए स्वतंत्र, मुक्त और जीवनदायी रास्तों पर बढ़ना चाहता है। उसके लिए प्रकृति की उन्मुक्तता, अल्हड़ता, जीवनधर्मिता और रचनात्मक शक्ति ही सर्वाधिक उपयुक्त प्रेरणा शक्ति है।

'भूख' कविता में कवि यह कहना चाहता है कि संघर्ष और विद्रोह से दीप्त भूख सर्वत्र सुंदर है, सर्वत्र वांछित है।

'छीनने आए हैं वे' कविता में कवि अपनी भाषा और अभिव्यक्ति का अधिकार छीन लिए जाने की आशंका से चिंतित है। इस अधिकार को तब भी छीना नहीं जा सका था, जब देश निरंकुश ब्रिटिश सत्ता के बर्बर शासन का शिकार था फिर भला आज वह अपने इस अधिकार को क्यों छोड़ दे।

## लीक पर वे चलें

लीक पर वे चलें जिनके
चरण दुर्बल और हारे हैं,
हमें तो जो हमारी यात्रा से बने
ऐसे अनिर्मित पंथ प्यारे हैं।

साक्षी हों राह रोके खड़े
पीले बाँस के झुरमुट,
कि उनमें गा रही है जो हवा
उसी से लिपटे हुए सपने हमारे हैं।

शेष जो भी हैं —
वक्ष खोले डोलती अमराइयाँ,
गर्व से आकाश थामे खड़े
ताड़ के ये पेड़,
हिलती क्षितिज की झालरें;
झूमती हर डाल पर बैठी
फलों से मारती
खिलखिलाती शोख़ अल्हड़ हवा;
गायक-मण्डली-से थिरकते आते गगन में मेघ,
वाद्य-यंत्रों से पड़े टीले,
नदी बनने की प्रतीक्षा में, कहीं नीचे
शुष्क नाले में नाचता एक अँजुरी जल;
सभी, बन रहा है कहीं जो विश्वास
जो संकल्प हम में
बस उसी के ही सहारे हैं।

लीक पर वे चलें जिनके
चरण दुर्बल और हारे हैं,
हमें तो जो हमारी यात्रा से बनें
ऐसे अनिर्मित पंथ प्यारे हैं।

## भूख

जब भी
भूख से लड़ने
कोई खड़ा हो जाता है
सुंदर दीखने लगता है।

झपटता बाज,
फन उठाए साँप,
दो पैरों पर खड़ी
काँटों से नन्हीं पत्तियाँ खाती बकरी,
दबे पाँव झाड़ियों में चलता चीता,
डाल पर उल्टा लटक
फल कुतरता तोता,
या इन सब की जगह
आदमी होता।

जब भी
भूख से लड़ने
कोई खड़ा हो जाता है
सुंदर दीखने लगता।

## छीनने आए हैं वे

और अब
छीनने आए हैं वे

हमसे हमारी भाषा।
अब, जब हम
हर तरह से टूट चुके हैं,
अपना ही प्रतिबिम्ब
हमें दिखाई नहीं देता,
अपनी ही चीख
गैर की मालूम पड़ती है,
एक आखिरी बयान
जीने और मरने का
हम दर्ज कराना चाहते है,
वे छीनने आए हैं
हमसे हमारी भाषा।

बहुत बड़ा जंगल था यह
जिससे हम होकर आए हैं,
जहाँ शेर चूहे की
और चूहे शेर की बोली बोलते थे

खरगोश हाथियों की तरह चिँघाड़ते थे
और हाथी झींगुरों की तरह
अँधेरे में सिर मारते थे,
चिड़ियाँ चहकतीं नहीं
गीदड़ों की तरह रोती थीं
मुर्गे बाँग नहीं देते थे
भेड़ियों की तरह गुर्राते थे,
सब अपनी-अपनी भाषा भूल चुके थे।
केवल हम उसके
बने रहने के बोध के साथ जिंदा थे
और रात-दिन
भूखे-प्यासे फटेहाल चलते जाते थे।

और अब
जब हम अपनी यातना
दर्ज कराना चाहते हैं
हमसे छीनने आए हैं वे
हमारी भाषा।

उल्लुओं की ज़बान में
कोयल गा सकती है तो गाए।
जिसे सिखाना हो उसे सिखाए।
हमारे पास बहुत कम वक्त शेष है—
एक ग़लत भाषा में
ग़लत बयान देने से
मर जाना बेहतर है,
यही हमारी टेक है।

## प्रश्न-अभ्यास

### लीक पर वे चलें

1. इस कविता में लीक पर न चलने की प्रेरणा कवि क्यों देता है?
2. ''एक अँजुरी जल'' विश्वास और संकल्प बनकर किस प्रकार अलीक पंथी का सहारा बन जाता है ?
3. लीक पर चलने वालों को ''चरण दुर्बल और हारा'' हुआ क्यों कहा गया है ?
4. अनिर्मित पंथ क्यों प्यारे हैं ? चयन कीजिए—
   (क) उसका निर्माण हम खोज भरी प्रगतिशील यात्रा में स्वयं करते हैं।
   (ख) हमें राह न मिलने पर चलना ही नहीं पड़ेगा।
   (ग) उसका अभी निर्माण ही नहीं हुआ है।
   (घ) दुर्बल चरण उस पर नही पड़े हैं।
5. काव्य-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए :
   (क) खिलखिलाती शोख अल्हड़ हवा
   (ख) गायक मण्डली-से थिरकते आते गगन में मेघ
   (ग) वाद्य-यंत्रों से पड़े टीले
   (घ) नदी बनने की प्रतीक्षा में कहीं नीचे शुष्क नाले में नाचता एक अँजुरी जल
6. इस कविता में प्रयुक्त उपमा के अंश छाँटिए और उनके भाषा-सौंदर्य पर प्रकाश डालिये।

### भूख

1. भूख से लड़ने वाला व्यक्ति क्यों सुंदर दीखने लगता है ?
2. ''तोते और आदमी के भूख से संघर्ष करने के साम्य'' का वर्णन कीजिए।
3. बाज, साँप, चीते और बकरी की स्थिति में आदमी भूख से कैसे लड़ सकता है ?
4. निम्नलिखित संदर्भों में कौन-सी भूख आदमी में संघर्ष-सौंदर्य भर देती है?
   (क) ज्ञान की भूख, (ख) धन की भूख (ग) पेट की भूख (घ) यश की भूख (ङ) रूप की भूख।

**छीनने आए हैं वे**

1. ''हम से हमारी भाषा छीनने'' का बयान कवि क्यों दर्ज कराना चाहता है।
2. किस स्थिति मे आखिरी बयान दर्ज कराने की बात कही गई है ?
   (क) हम मरणासन्न हैं और अपनी पहचान खो बैठे हैं ?
   (ख) हम चीख-पुकार में समाप्त हो रहे हैं और कोई सुनता नही।
   (ग) हम जीने और मरने का अर्थ भूल बैठे हैं और लुट रहे हैं।
   (घ) हम से हमारी भाषा छीनी जा रही है और हम मौन हैं।
3. केवल हम उसके बने रहने के बोध के साथ जिंदा थे – का आशय स्पष्ट कीजिए।
4. उस जंगल से क्या तात्पर्य है, जिससे गुजर कर आने की बात कही गई है। जंगल के.सफर में भूखे-प्यासे फटेहाल चलने की बात कवि ने क्यों कही है ?
5. यातना दर्ज कराते समय भाषा छीनने के तात्पर्य को स्पष्ट कीजिए।
6. ''एक गलत भाषा में गलत बयान देने से मर जाना क्यों बेहतर हैं ?''
7. आशय स्पष्ट कीजिए :
   (क) उल्लुओं की भाषा में
   कोयल गा सकती है तो गाए
   जिसे सिखाना हो उसे सिखाए।
   (ख) मुर्गे बाँग नहीं देते थे
   भेड़ियों की तरह गुर्राते थे
   सब अपनी अपनी भाषा भूल चुके थे।

# केदारनाथ सिंह

केदारनाथ सिंह का जन्म 7 जुलाई, 1934 ई. को बलिया जिले के चकिया गाँव में हुआ। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से हिन्दी में एम. ए. करने के बाद उन्होंने वहीं से आधुनिक हिन्दी कविता में बिम्ब विधान विषय पर पी-एच. डी. उपाधि प्राप्त की। संप्रति वे जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में हिन्दी के प्रोफेसर और भारतीय भाषा केंद्र के अध्यक्ष हैं।

केदारनाथ सिंह मूलतः मानवीय संवेदनाओं के कवि हैं। अपनी कविताओं में उन्होंने बिंब-विधान पर अधिक बल दिया है। तीसरा सप्तक के अपने वक्तव्य में उन्होंने कहा है — ''प्रकृति बहुत शुरू से मेरे भावों का आलंबन रही है — कछार, मक्का के खेत और दूर-दूर तक फैली पगडंडियों की छाप आज भी मेरे मन पर उतनी ही स्पष्ट है— समाज के प्रगतिशील तत्वों और मानव के उच्चतर मूल्यों की परख मेरी रचनाओं में आ सकी है या नहीं, मैं नहीं जानता पर उनके प्रति मेरे भीतर एक विश्वास, एक लालसा, एक लपट जरूर है जिसे मैं हर प्रतिकूल झोंके से बचाने की कोशिश करता हूँ, करता रहूँगा।'

केदारनाथ सिंह की कविताओं में शोर-शराबा न होकर, विद्रोह का शांत और संयत स्वर सशक्त रूप में उभरता है। 'जमीन पक रही है' संकलन में 'जमीन', 'रोटी', 'बैल' आदि उनकी इसी प्रकार की कविताएँ हैं। संवेदना और विचारबोध उनकी कविताओं में साथ-साथ चलते हैं।

जीवन के बिना प्रकृति और वस्तुएँ कुछ भी नहीं हैं — यह अहसास उन्हें अपनी कविताओं में आदमी के और समीप ले आया है। इस प्रक्रिया में केदारनाथ सिंह की भाषा और भी नम्य और पारदर्शक हुई है और उनमें एक नई ऋजुता और बेलौसपन आया है। उनकी कविताओं में रोजमर्रा के जीवन के अनुभव परिचित बिम्बों में बदलते दिखाई देते हैं।

शिल्प में बातचीत की सहजता और अपनापन अनायास ही दृष्टिगोचर होता है।'अकाल में सारस' कविता संग्रह पर उनको 1989 के साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

अब तक केदारनाथ सिंह के चार काव्य संग्रह प्रकाशित हुए हैं:अभी बिल्कुल अभी (1960), जमीन पक रही है (1980), यहाँ से देखो (1983) तथा अकाल में सारस(1989)।'कल्पना और छायावाद' उनकी आलोचनात्मक पुस्तक है। हाल ही में उनकी चुनी हुई कविताओं का संग्रह प्रतिनिधि कविताएँ नाम से प्रकाशित हुआ है।

'एक छोटा-सा अनुरोध' में कवि यह कहना चाहता है कि जीवन में ताज़गी, सरसता और रंग लाने के लिये हमें बिचौलियों से बचना होगा और सीधे किसान और मजदूर के बाद उस जगह जाना होगा, जहाँ वे इन वस्तुओं को पैदा करते हैं।

'जीने के लिये कुछ शर्तें' कविता में कवि ने मानव जीवन में प्रकृति धर्म, घटना-चक्र, मैत्री आदि की आवश्यकता को रेखांकित किया है।

## एक छोटा-सा अनुरोध

आज की शाम
जो बाज़ार जा रहे हैं
उनसे मेरा अनुरोध है
एक छोटा-सा अनुरोध
क्यों न ऐसा हो कि आज शाम
हम अपने थैले और डोलचियाँ
रख दें एक तरफ़
और सीधे धान की मंजरियों तक चलें

चावल ज़रूरी हैं
ज़रूरी है आटा दाल नमक पुदीना
पर क्यों न ऐसा हो कि आज शाम
हम सीधे वहीं पहुँचे
एक दम वहीं
जहाँ चावल
दाना बनने से पहले
सुंगध की पीड़ा से छटपटा रहा हो

उचित यही होगा
कि हम शुरू में ही
आमने-सामने
बिना दुभाषिय के
सीधे उस सुंगध से
बातचीत करें

यह रक्त के लिए अच्छा है
अच्छा है भूख के लिए
नींद के लिए
कैसा रहे
बाज़ार न आए बीच में
और हम एक बार
चुपके से मिल आएँ चावल से
मिल आएँ नमक से
पुदीने से
कैसा रहे
एक बार ...
सिर्फ़ एक बार ...

## जीने के लिये कुछ शर्तें

ज़रूरी है
हम जहाँ हों,
वहाँ से दिखता रहे वह झिलमिलाता
क्षितिज
जो केवल हमारा है!
हम बढ़ाएँ हाथ
तो खुल जाए
बाहर रास्ते की ओर
कोई द्वार सहसा !

झुकें
तो बिल्कुल अयाचित
सामने की मेज़ से,
या बगल के आहट भरे
आलोक-उत्सुक दराजों से

एक उत्तर फूटकर
हम को चकित कर जाए !
ज़रूरी है !
ज़रूरी है
सोचते-से हम लगे हों काम में,
पर अंतरालों से
कभी कोई कबूतर निकल जाए;
कभी कनखी से अचानक
दूर मंदिर-कलश की
कुछ लहरियाँ दिख जाएँ
ज़रूरी है !
ज़रूरी है

सरहदो पर कहीं हो अनुगूँज,
जो अस्तित्व के हर तार से होकर
गुज़रती रहे;
कहीं हों परछाइयाँ
जिनसे हवा में
खयालों के कोण बनते रहें;
कहीं हो संभावना
जो हर थकन के बाद हमको
बोलने के लिए बातें,
तोड़ने के लिए तिनके,
बैठने के लिए
थोड़ी-सी जगह दे जाए !
ज़रूरी है !

## प्रश्न--अभ्यास

### एक छोटा-सा अनुरोध

1. कविता में व्यक्त एक छोटा -सा अनुरोध क्या है?
2. एक छोटा-सा अनुरोध किन लोगों से किया गया है ?
3. कविता में उपभोक्ता को सीधे कहाँ पहुँचने का अनुरोध किया गया है ? छाँटिए :
   (क) धान से निकला चावल जिस दूकान पर मिलता है।
   (ख) जहाँ धान से चावल निकाला जाता है।
   (ग) जहाँ धान खेत खलिहान में काट कर लगाया जाता है।
   (घ) जहाँ किसान की मेहनत का फल धान की बालियों में लहराता है।
4. उत्पादक और उपभोक्ता को बिचौलियों से बचाने का अनुरोध क्यों किया गया है?
5. "कैसा रहे, एक बार ... सिर्फ एक बार" के द्वारा कविता में व्यक्त भाव-सौंदर्य पर टिप्पणी कीजिए ?
6. आशय स्पष्ट कीजिए :
   (क) जहाँ चावल दाना बनने से पहले
   सुंगध की पीड़ा से छटपटा रहा हो
   (ख) बिना दुभाषिए के
   सीधे उस सुंगध से
   बातचीत करें
   (ग) कैसा रहे
   बाज़ार न आए बीच मे

### जीने के लिए कुछ शर्तें

1. कविता के अनुसार जीने के लिये कौन-कौन-सी शर्तें जरूरी हैं ?
2. झिलमिलाते क्षितिज में जीने के लिये आवश्यक शर्त को चिह्नित कीजिए :
   (क) अपने बनाए रास्ते पर चलकर मंजिल तक पहुँचने का प्रयत्न बना रहे।

में हमें रास्ता और मंजिलें बिना माँगे मिलती जाएँ।

में हमारे हाथों को राह बनाने और द्वार पाने का अधिकार रहे।

3. कार्य में संलग्न रहते हुए भी परिवेश झलक जाए — यह भाव किन पंक्तियों में प्रकट हुआ है ?

4. भाव-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए :

(क) हम बढ़ाएँ हाथ
तो खुल जाए
बाहर रास्ते की ओर
कोई द्वार सहसा !

(ख) या बगल के आहट भरे
आलोक उत्सुक दराजों से
एक उत्तर फूटकर
हम को चकित कर जाए !

(ग) बोलने के लिए बातें
तोड़ने के लिए तिनके,
बैठने के लिए
थोड़ी-सी जगह दे जाए!

5. सरहदों की अनुगूँज परछाइयों और संभावनाओं में जीने के लिये क्या-क्या जरूरी है, और क्यों ?

# शब्दार्थ और टिप्पणियाँ

## मलिक मुहम्मद जायसी

**पून्यौ तिथि** = पूर्णिमा की तिथि
**पालि** = किनारा
**कुलेली** = केलि अथवा क्रीड़ा
**नैहर** = मायका, मातृगृह
**जिउ लेहीं** = प्राण लेगे, कटु वचनों से हृदय पर आघात करेंगे
**दहुँ** = शायद, कदाचित्
**खोंपा** = जूड़ा बँधा हुआ केशो का गुच्छा
**मुकलाई** = मुक्त किया, खोला
**ओनई** = झुक आना
**राहाँ** = राहु
**छपि गै** = छिप गई
**विमोहा** = विमुग्ध हो गया
**मिस** = बहाने
**बाद मेलि कै** = बाजी लगाकर
**रउताई** = प्रभुत्व
**खेमा** = क्षेम, कुशलता
**फुलायस** = सुगंधित
**पैठत** = प्रवेश करने पर
**पैसारू** = (उत्तर) प्रसारित कर सकूँगी या (उत्तर) दे पाऊँगी
**ओप** = आभा, कान्ति

## तुलसीदास

**सरोज** = कमल
**बाल पतंग** = प्रातः कालीन सूर्य

**भृंग** = भ्रमर
**निसि** = रात्रि
**महिप** = राजा
**कुंजर** = हाथी
**मृनाल** = कमल की डंडी
**सयानप** = चतुराई
**सिरानी** = मारी गई, चली गई
**कुंभज** = अगस्त्य ऋषि
**अलिनि** = भ्रमरी
**व्याल** = सर्प
**कमठ** = कछुआ
**कइँहारू** = पार उतारने वाला
**कोदण्ड** = धनुष
**सतानंद** = राजा जनक के पुरोहित
**पावक** = आग
**दामिनि** = बिजली
**सनाला** = नाल के साथ (जलज सनाला)

**पद**

**परुष वचन** = कठोर वचन
**पामर** = नीच
**लह्यो** = प्राप्त कर लिया
**लवनि** = लावण्य, सौंदर्य मक्खन
**मयन** = कामदेव
**सायक जोरे** = बाण चढ़ाए
**खौरे** = खंड, बिंदु
**गौहे** = निशाने की ओर
**सकोरे** = सिकोड़ कर
**मोचत** = छोड़ते है
**मिति** = सीमा

## सेनापति

**बरन-बरन** = तरह-तरह से

**बग-माल** = बगुलो की पंक्ति
**सियरात** = ठंडी
**ऊरध** =उर्ध्व (ऊँचा)
**छीर-सागर** = क्षीर सागर
**वृष को तरनि तेज** = ज्येष्ठ माह में वृष राशि का तपता हुआ सूर्य
**तचति** = तपकर
**झरनि** = झरकर
**सीरी** = ठंडी
**सूर** = सूर्य
**पसारिपानि** = हाथ फैलाकर
**पावक** = अग्निगर
**सवितऊ** = सूर्य
**बासर** = दिन

## पद्माकर

**औरै भाँति** = वसंत के आगमन से प्रकृति में और लोगों के मन में अकस्मात् अद्भुत परिवर्तन आ गया ।
**चलाकैं** = चलाका का बहुवचन, बिजली
**चरजि गई** = कौंध गई
**लरजि गई** = झूम गई
**तरजि गई** = ताड़ना दे गई । वियोगावस्था में वर्षा ऋतु दुःखदाई हो रही है।
**नाई** = उड़ेल दी
**मीड़ि** = मल दी
**अभीरन** = अहीरों
**भाई करी मन की** = मन मानी की
**थोक** = समूह
**अगर** = अगरू
**फबि रहे** = शोभायमान हो रहे हैं
**झालि रहे** = फैल रहे है

## जगन्नाथ दास रत्नाकर

**उद्धव का मथुरा लौटना**

**जित-तित तैं** = जहाँ-तहाँ से

**हेत** = लिए
**सँभारत न साँसुरी** = तेज श्वासों को सँभालना कठिन हो रहा था
**मयूर-पुच्छ** = मोर-पंख
**उमाहै** = उत्साह से युक्त
**पाँसुरी** = पतली
**कीरति-कुमारी** = राधा
**सुरवारी** = अच्छे सुरों वाली
**आनन** = मुख
**रंचक** = तनिक
**नीठि** = किसी तरह, कठिनाई से
**बिसूरि** = दुखित होकर
**गरब-गढ़ी** = गर्व का किला
**छाके** = परितृप्त
**फुरत** = निकलना, स्फुटित होना

**भीष्म प्रतिज्ञा**

**छिति** = भूमि
**गीति** = कीर्ति-गान
**रूँधेगी** = भर जाएगी
**भीति** = दीवार, भय
**कैतौ** = या तो
**सव्य साची** = दाएँ और बाएँ दोनों हाथों से समान गति से बाण चलाने वाला (अर्जुन)
**साक** = धाक
**सारथ** = सार्थक

## जयशंकर प्रसाद

**आँसू**

**कलित** = विभूषित
**असीम** = सीमाहीन
**तरंगिनि** = तरंगों वाली, नदी
**निलय** = आकाश

**स्फुलिंग** = अग्निकण, चिनगारी
**वाडवज्वाला** = समुद्र की अग्नि

### वे कुछ दिन

**युग** = दो
**मालती–मुकुल** = मालती पुष्प की कली
**गंध–विधुर** = सुगंध का इच्छुक भँवरा
**विरला** = अद्वितीय

### विजयिनी मानवता

**अवसाद** = शिथिलता, उदासी
**निर्मोक** = केचुली
**अमंद** = कम नही
**यजन** = यज्ञ
**संसृति** = जन्म-मरण की परंपरा, संसार
**उत्स** = स्रोत

## सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

### स्नेह निर्झर

**पिक** = कोयल
**शिखी** = मोर
**दह गया है** = जल गया है
**प्रभा** = चमक, कांति, प्रतिभा
**अनश्वर** = स्थायी, कभी नष्ट न होने वाला
**पुलिन** = नदी तट
**निरुपमा** = जिसकी (जिसके सौंदर्य की) उपमा न दी जा सके।
**अलक्षित** = जो दिखाई न पड़े, जिसे जाना ही नहीं गया।

### गहन है यह अंधकारा

**अंधकारा** = अंधकार से भरा कारावास, अंधकूप

**अवगुंठन** = घूँघट रोक, रुकावट
**लुण्ठन** = लूटना, लुढ़कना
**शशधर** = चाँद
**तनु** = शरीर
**रुद्र** = विकराल, डरावना
**श्यामल** = हराभरा
**गेह** = घर

**संध्या सुंदरी**

**तिमिरांचल** = तिमिर (अंधकार) रूपी आँचल
**सौंदर्यगर्विता** = रूपगर्विता, वह नायिका जिसे अपने सुंदर रूप पर गर्व हो
**उत्ताल** = ऊँची
**क्षिति** = पृथ्वी
**अव्यक्त** = असपष्ट, छिपा हुआ
**विस्मृत** = भूला हुआ
**कमनीय** = सुंदर
**विहाग** = अर्द्धरात्रि में गाया जाने वाला एक राग विशेष

## अज्ञेय

**कितनी नावों में कितनी बार**

**प्रभा-मंडल** = आलोक का घेरा
**अक्लांत** = बिना थके, ताज़गी से भरा मन
**संत्रस्त** = बहुत डरा हुआ, भय से काँपता हुआ

**शब्द**

**मोती** = अर्थ
**नैवेद्य** = देवता को समर्पित की जाने वाली भोज्य वस्तु

**नदी के द्वीप**

**स्रोतस्विनी** = नदी, परंपरा प्रवाह का प्रतीक

**हम को छोड़कर बह जाए** = हम सामाजिक परम्परा से अछूते रह जाएँ
**हमारे कोण रहेंगे ही नहीं** = व्यक्ति की शारीरिक और मानसिक विशिष्टताएँ परंपरा प्रवाह से ही निर्मित हुई हैं द्वीप बनने की पूरी प्रक्रिया बताकर कवि ने एक छोटे-से भाव चित्र को व्यापक आधार प्रदान किया है । हमारे सामाजिक जीवन से व्यक्तित्व को संस्कार ही प्राप्त करना है, अपने स्वतंत्र अस्तिवत्व को सदा के लिए विलय नहीं कर देना है ।

**प्लावन** = बाढ़
**नियति** = भवितव्य, भाग्य
**क्रोड** = गोद
**भूखण्ड** = पृथ्वी, प्रतीकार्थ-समाज
**दाय** = समाज से प्राप्त उत्तराधिकार
**स्वैराचार** = मनमानापन, निरंकुश आचरण
**अतिचार** = अत्याचार
**यदि ऐसा कभी ... वह भी** = किसी के स्वेच्छाचार या अत्याचार से या तुम स्वयं अपनी प्रसन्नता के लिए विनाशकारी रूप धारण कर लो तो वह भी हमें स्वीकार है ।
**संस्कार तुम देना** = हमारे व्यक्तित्व को फिर संस्कार अर्थात् वैशिष्ट्य प्रदान करना ।
**कर्मनाशा** = कीर्तिनाशा-कर्मनाशा नदी उत्तर प्रदेश और बिहार की सीमा पर है । जिसके बारे में पौराणिक मान्यता है कि उसका जल स्पर्श करने से पुण्य नष्ट हो जाते है। यहाँ प्रतीकार्थ है किसी बड़ी सामाजिक हलचल से होने वाला परिवर्तन ।

## मुक्तिबोध

### ओ मेरे मन

**उदरम्भरि** = उदरपूर्ति को जीवन का लक्ष्य समझने वाले
**अनात्म** = जड़, संवेदनशून्य
**कनात** = किसी खुले स्थान को घेरने के लिए बनाई गई कपड़े की दीवार, तंबू
**तमगा** = पदक
**निष्क्रिय** = निकम्मा
**हंकाल दिया** = हाँक दिया
**मंतव्य** = अभिप्राय

**सहर्ष स्वीकारा है**

**भीतर की सरिता** = भावनाओं का अंतः प्रवाह
**मौलिक** = मूल संबंधी, मुख्य
**संवेदन** = अनुभूति
**दक्षिण ध्रुवी अंधकार** = दक्षिण ध्रुव पर छाया हुआ घना अँधेरा
**परिवेष्टित** = चारों ओर से घिरा हुआ
**आच्छादित** = ढकी हुई, छाया हुआ
**पिराती है** = दर्द का अनुभव कराती है, दुखती है
**भवितव्यता** = जिसका होना निश्चित हो, जिसे टाला न जा सके, होनी

## नागार्जुन

**यह कैसे होगा**

**अहरह** = रात-दिन
**अलस-अकर्मा** = आलस्य मे पड़ा हुआ निकम्मा
**योग-क्षेम** = कुशल मंगल
**लघुतम परिधि में** = छोटे-से-छोटे घेरे मे
**मुकुलित** = कलियो से भर जाना
**परिणत प्रज्ञा** = पूर्ण विकसित बुद्धि और प्रतिभा
**कनकाभ** = स्वर्णिम आभा से दमकता हुआ
**तिमिरावृत** = अधकार से घिरा हुआ
**निपट-निमीलित** = पूरी तरह बंद

**बहुत दिनों के बाद**

**ताजे-टटके** = एकदम ताजा
**तालमखाना** = मखाना

## सर्वेश्वर दयाल सक्सेना

**लीक पर वे चलें**

**लीक** = बना-बनाया रास्ता

**अनिर्मित पंथ** = रास्ते जिनका अभी निर्माण नहीं हुआ।
**शोख अल्हड़ हवा** = चंचल-मस्त हवा
**वाद्य-यंत्र** = बजने वाले बाजे, जैसे सितार, तबला आदि

**छीनने आए हैं वे**

**वे** = शोषक, स्वामी
**प्रतिबिम्ब** = परछाई-प्रतिच्छाया
**यातना** = अतिकष्ट

## केदारनाथ सिंह

**एक छोटा–सा अनुरोध**

**डोलचियाँ** = बॉस, मूँज से बनी टोकिरयाँ ।
**धान की मंजरियों तक** = धान के खेतो तक जहाँ धान की बालियाँ झूम रही हैं।
**दुभाषिय** = दो भाषाओ पर समान अधिकार से बात कर सकने वाला, एक दूसरे की भाषा न समझने वाले व्यक्तियों के बीच में बैठकर उन्हें एक दूसरे की बात समझाने वाला व्यक्ति । कविता में किसान और खरीददार के बीच की कड़ी, बिचौलिया, व्यापारी ।
**बाजार** = वस्तुओं के क्रय-विक्रय में बिचौलियों के शोषण का प्रतीक

**जीने के लिए कुछ शर्तें**

**अयाचित** = बिना माँगे, बिना माँगा हुआ
**बगल के आहट भरे आलोक-उत्सुक दराज़ों से** = परिवेश से प्राप्त सच्चाईयों का बोध
**अंतराल** = बीच की दूरी, फर्क, ओट, खाई